

मिनखपणा रौ मोल

•

बराणदाता

पडितप्रथर धद्वेय मत्री

श्री पुष्करमुनिजी महाराज

★

सपाक

श्री ववेद्र मुनि, शास्त्री साहित्य रत्न

•

॥

- रूपांतरकार
नृसिंह राजपुरोहित, एम ग
-
- प्रकाशक
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जोधपुर
- द्रव्य सहायक
सेठ धनराजजी विनाकिया खारडप
- पुस्तक प्राप्ति स्थल
[१] मण्डारी सरदारचन्द जैन बुकसेलर
त्रिपोलिया बाजार जोधपुर
[२] सेठ धनराजजी विनाकिया
मुषी खारडप जि बाड़मेर
- प्रथम प्रवेग
१९६४
- मूल्य
एक रुपया
- मुद्रक
साधना प्रेस, जोधपुर

कठे काई हें

दो आयर

संपादक रा दो वोल

रक भोलसारा

मिनस्वपण रौ मोल

* १ सू २६

आचार अर विचार

* ३० सू ४३

सजम रौ वमनकार

* ४४ सू ५६

दिवक रौ प्रकास

* ६० सू ७३

धर्म रौ मर्म

* ७४ सू ८२

जीवरा रौ इमरत

* ८३ सू ९४



दो भाखर

जन्म ही जीवत आत्र मंत्र मंत्र ही मन्त्रधारों में उलझवाही है। चाँदिये वेद, विद्योत्तर आत्र कर्त्तृ ही शोनी सुगम ही है। उच्च या जमी डाल सात सुखी है जिनमें ठागुरी कालनी कावे है। आत्र देस दुगी है, समान देसम है आत्र मंत्रमयी परेसम है। कठे ई अनीरी-मतीवी ही मन्त्रगा है ती कठे ई अच-नीष ही मेर भावना है। कठे ई तरकटी हा नाम पर मीत हा मंत्रमंत्र कपे है तो कठे ई योनी परंपराओं आत्र सूत्री कर्त्तियां है परत बरजगी है ही है।

हृदियां ही धारा आत्र भूषणी है, अणु कर्त्तया कपी काली कर्त्तयन उप-कपीही है। न जगुं किय कर्त्तय नय मंड जगी आर समा ही सत्यनाम कर दनी। पूरी गभार आत्र धर धर धूली कठे काल हा दिनारा पर कभी है।

इसी हास करण श्री है के मन्त्रमयी भौतिक विकास में ती मूत्र चाँदी बरजगी है परत आध्यात्मिक आत्र नैतिक विकास में कपी कपी रंग्या है। ही परगली हालत में मन्त्रवता परागणी है आत्र मन्त्रवता जोर कर ही है। मिनम ती ज है परत मिनसपणी मन्त्री है।

इसी अमयी देना में मात हा एक ग्यनी मंत्र ही मिर ल आत्र जगुमरी वणुगी ही श्री वेन जो न कठे ई कठे है आत्र न कठे ई कठे है मूत्रा मन्त्रवा मन्त्रगा है सही मातम बनाईला। बाप हा रहल्यट में परत मिनम ही साहित हा दरण्य करारंला। 'मिनसपणी ही मन्त्र' मन्त्रगा है जीवत मंत्र ताल्लिक मन्त्रु वाली एक अमर बरुगी है। हा एक इमा संत है कठे मूं पूरी है, जिन ही चाँदिये मिनमल आत्र जिनो दरियाव ही परत अया है। जिनो है वानस कप हा आधुन इगरी बचनां ही रस आगण ही मीठी जिल्लो है वे आणी ती म न है के आपरा अमन्त्रक बचन किय मल सीया इन पर अमर करे आत्र सुखुण वाली मन्त्रां ही मीठ ने चितरंम बग्या है परत जिनो ने श्री मन्त्री अमर ही मिनसा है, वारे वामी आ अमोलक गयी 'मिनसपणी ही माल

है। इन्होंने आपनै प्रवचनकार श्रद्धय मंत्री पुष्करमुनिजी म० की विद्वत्ता अरु अमरवाणी का परतरा दरसण होसी। इन्होंने सामै भारत की सजीयता, भावां की मंभीयता अरु शैली की विमैयता आपरी मा भोय लसी। आपरै दिवंग रा तार मते ई भयमणाय ऊठसी अरु कम देभी के इण प्रवचनां में भारतीय सस्त्री की आत्मा परतल बोख री है।

श्रद्धय मंत्री मुनिश्री की जोधपुर निरसा वास लघ रै वास्ते बरदान साबत हुआ। इण निरसा वाम में गहनै ई आपरा प्रवचन सुणण री सभैरी अवसर निनपी। गृह बैय सभ के मुनिश्री एक श्रोत्रांत वक्ता है अरु आपरा विचार अनोट वैग्यानिक है। आप अवरी मू अवरी वाच नै सरल अरु सीधी भासा में समभावण री पूरा माही रामी, जिणम सुणणिया रै मन पर आही असर पई। आ पायी जैन अरु श्रैन सगलां रै वामै एक सरीणी ग्यांन देवण वाली है। गृह उम्मीद कम के इणनै पढ़ाघ घणा सू घणा लोग लाम उठासी।

इन्द्रनाथ मोदी

(‘यायमूर्ति, राजस्थान हाई कोट)

ए पादक रा दो बोल

अद्वैत सदगुरुवर्क श्री पुष्कर मुनिजी म० के इस प्रवचना की संग्रह सब मू पैक्षी हिन्दी में 'विदगी की मुक्कल' के नाम मू छपी। इस संग्रह नै समान में आठौ आवकार मिलपी। मोटा मोटा विद्वानां अर पत्र पत्रिकावा इहरी सुला मन मू तारीख करत। लिखनी के अे प्रवचन जमाना की मज रै मापक है अर आउप वाली पीढ़ी नै पण सही माग्ग बतावए वाला है।

इहरी पौ आ इज पोथी गुजगती में 'जिगी नो आनंद' के नाम मू निबली अर निकलता पण गुनान की संस्कारी जनता इहने िया छापी पर चढ़ाव ली। इहमू 'त्री सावन' हेगौ के पोथी समान रै बान्ने घणी काम की है। ते इह की रूपतर प्रतीय भासावां में कियो जावै तो पण मू घण्टा लाम इहमू प्रेरणा लेय नै आपरो जीवए सुधार सकै। फलमरूप इहरी औ राजम्यनी रूपतर 'मिनमपणा की माल' आपरो हाया में है। राजम्यान की दो करान जनता पिही आज आनम मगोअर उठए की कोमिस में है, आपरी मायङ नामा में इमा सुदर विचार पणर जम्बर लाम उगामी इगी गहनै पक्की उगमी है।

जन धम टै मू आपरो सिद्धता की प्रचार जनता की बोली में करती आयी, इह कारण इज वी प्रजा रै हिया में आसानी मू उतर सकी। जन-मजुम रै बान्ने जनवांगो एक साम्बत जम्बर है अर आज रा जुग में पण आ बान विभी की विभी इन जम्बरी है। इह कारण इज में एन मू तंगार कियोडी औ राजम्यनी रूपतर आप ताई पूग सकी है।

गहारी जण में आधुनिक राजम्यनी गद्य में कोइ जन मत की आ सक्मू पंली रचना ठप की है, जो राजम्यनी मोया अर सत परंपरा रै बान्ने पण एक गुमत्र की बान है।

रूपतरकार श्री नृसिंह राजपुरोहित, एम ए आधुनिक राजम्यनी गद्य रा एक आठा लेखक है, जिगा पूरी मैरुन मू औ रूपतर कियो है।

एक श्रेष्ठद्वारा

इण पोयी रै द्रव्य-सहायक श्री धनराज माई रौ जनम म० १६७६ मं मादवा सुनी ६ नै महाराष्ट्र में हुवा, पण यां रा वडैरा अर अे पतै साठप (जिला वाडमर) रागस्थान रा काम्य रैबासी है । सत्पते री सिद्धा माडप गाम में इन हुई, पण उण मामूली सिद्धा रै बल रू हिम्मत अर तबदीर रै पाणु सकत २००६ तू श्री धनराज माई नंदुरवार (खान देस) में श्री कसरलाल धनराज साह री परम रै नाम सू इमारती लकड़ी रा एक मोटा कपागी है । परम री साप्पावा नवापुर, सोनगड अर वगाई में पण है । आप एक आद्धा सुभागवादी अर समानसेवी विचारा रा आदमी है । अवार इण दिनां में इज आप कई लोकोपकारी कामा में जिधौ पैसी सरच कियौ है, उणरा आंक लगभग तीस हजार री है । इण पायी खानर पण आप एक हजार रु० सन्तुष्टता सरूप दीना है, उम्मीद करां क लोकोपकारी कामा में या री रुचि बणी रैवैली ।

नसिंह राजपुरोहित



सेठ धनराजजी विनाकिया

मिनखपणा रौ मोल

**

मिनखपणा रौ मोल

दुनिया में आज सबसू बडौ तोटौ मिनखपण रौ है । ओ इज कारण है के इण बीसवी सदी में मिनखपणा पर बहोत ज्यादा साच विचार कियौ जाव । दुनिया रौ हर मुल्क, हर प्रांत, हर समाज, हर धर्म, हर पथ अर हर संप्रदाय इण बाबत सोचें । बात मुद्दा रौ होवण सू मानखा रौ ध्यान इण कानी जावणौ बाजब ंज है । उणरौ चितन मनन अर स्रवण मानग्या रौ रळम्याहो गूछळिया न सुळभावण में लागणौ इज चाहिज । सप्तार म सगळा मुक्का रौ बरपणा मिनखपणा रौ नीव माथ इज होवणौ चाहिज । आ बात आज सगळा समभदार मिनख एक सुर सू बव है ।

सवाल उठ सक के आज रौ मिनख मिनखपणा बाबत इज इतरो क्यू सोच ? दुनिया म दूची भी तौ कई चीजां है— धन माल है, सुख सपत है, भोग विलास है । पण इण सगळी वाता न छोड न फगत मिनखपणा पर इज इतरो ऊडौ विचार करण रौ आज काई जरूरत पडगी है ? मिनखपणौ इसी काई

चीज है के जिण रे बिना आपण आचार विचार रे रथ-जात्रा जीवण र मदान मे पूरी नी होय सव ? ओ इसी कुणसी परगास है के जिण बिना मन मदिरे मे धार अघारो छाव जाव ? मिन्सपणो इसी कुणसी संगीत है व जिण बिना आपण जीवण रे बाणा बाज नी सक ? मिन्सपणो इसी काई अमोलक वस्तु है के जिण बिना मिन्स आपर लक्ष बिंदु तोई पूग नी सव ?

इसा अलसा सवाल आज मानसा र मन म घूम है । वारा पटुत्तर डूढणा पडसो, इण बिना छुटकारो इज नी है, नी ती मानसो पात जोसम म पड जावला ।

आज रो जुग सही अरथा मे कळजुग है । वग्यानिवा रे किरपा सू आज पावड पावड कळ वारसाना मौजूद है । धरती सुरग बण रही है, अर मानसो मोजा मार रहघो है । टूटी खोलता पाण गगा जमता रे निरमळ धार उणरी चरण-रज घोण न तयार रव, बटण दबावता पाण धमधमाट करतोडो उजाळी उणने अधकार सू उबार लेव । उणरो आख्यां इतरी मोटी व्हैगी है के वो अठ बठघो-बठघो हजारो पोसा दूर रे चीज देख सव है, उणरा कान इतरा लावा व्हैग्या है के वो लाखा मील दूर रा बाल घर बठघो सुण सक है, उणर पमां म इतरो गाढ़ आयग्यो है के वो लाखा करोडां मील रे जात्रा जळ, थळ अथवा आभ म सपाटा सू कर सक । उणरो पहाच फगत धरती लग इज नी पण चदरमा अर नगतरा ताई है, उणरा मगज म सकडां प्रथ पचावण रे ताकत है, उणरा हाथ हजारो मिन्सा रो वाम

एवसा इज करण लाग्या है, धरती घात्र एकरे इच्छे क फल-
सीक जग बणगी है इण तरै सू मानवे घात्र प्रकृति की कहे
पूक नै मुरग रा दवतावां तक न चमोउ द दीने, है । निष्कण
रो पूठ मिल जावण सू ससार रो नास अर निदान जन्म
रो मूठया म बघयो है ।

वार तो मानव मुरग रो वैभव विन्दर नाचो है एग कइ
उण कदई आपरा अदरुणी भावी देगण ग ठकनोर कोउ
है ? हिरदा रो घडकणा न गिणण रो, मन रा उठा-कण्ड है
नापण रो अर बुद्धि रो पीठा न परमप रो कहे कोउ
कीवो है ? काई मानया न उठ मुख रो सगीत-गिया न
न मिली है ? काई उण कदई आई जानन ग कण
कीवो के इण मुरग रो सहनाइया र सार कण्ड-कण्ड
हाहाकार छिप्याडो है ? उणर हिरदा, मन अ-कण्ड है
असाती रो ज्वाडामुखी घघक रहयो है, वो कण्ड-कण्ड
रा बभव न किताक दिन टिकण दवता ? कण्ड-कण्ड
आत्मिक सुदरता रो रूखडो किताक दिन कण्ड-कण्ड
रय सकता ? जठा ताई मानया र मन के कण्ड-कण्ड
नही गाज, हिरदा म ग्यान रा सहनाई कण्ड-कण्ड
भौतिक प्रगति, वारला बभव अर कण्ड-कण्ड
फूतरा वरोवर इ कोमत नी है । कण्ड-कण्ड
माग्य काटां स भर रागयो है इमर कण्ड-कण्ड

समस्यावा रा असली समाधाना न एक कानी राखन नक्ली समाधाना री गूज गळी मे राजी व्हे रहघी है । अपण जीवण री विधाता, मिनस, आज पोत इज जीवण सू हार चुक्या है । उणर मायन सगळी बभव मौजूद ह पण वी किस्तूरी मिरग र ज्यू वैभव न बार खोज रहघी ह । उणरी हार री कारण, उणर स मुख ऊभो ओ मानव जगत इज ह जिणन वी आछी तरै सू समझ नी सवयो ह । आज मिनस मिनस न जडामूळ सू गमावण म लाग्योडो है, आदमी आदमी र वासत माथा फोडण री कारण बण्योडो ह मिनस मिनस र वासत खतरा री कारण बण्योडो ह, मानसा री मिन्नखपणा पर सू विसवास उठतो जाय रहघी ह अर मिनस मिनस र वासत भय रूप बणतो जाय रहघी है । मानसा री मन आज आसकावा रा बादळा सू धिरघोडो है जुद्ध रा भय स टरघोडो है । एवरेस्ट री चोटी ताई पूगण वाळा मानसा रा पग आज मानसा री झूपडी ताई पूगण म थाव रहघा है, सोने रा आभ म उडण वाळा मिनस न आज धरती मू नफरत होवण लागगा है । सगळी धरती उण न काटा सू भरी दीस री' है । महावीर, बुद्ध, राम, कृष्ण इसा मसीह अर गांधी री वाता न आज वी फालतू बकवास समझ रहघी है । स्वार्थ रा चानणा मे आज परमारथ उणरी आत्या सू अदीठ व्हेघी है । दुनियां रा पूरी मानसा जात री भाग आज रूस अर अमेरिका र साग बघम्यो है । तर तर रा वितडावादा र रोळण्ट मे मिनस आज मानसा री अदरुणी आवाज न भूलतो जाय रहघी है । बारली बभव सागर री पाण बढ न आज मानसा रा पग पलाळ रहघी है, छतां पण अचभा

रा बात आ है के मुग साति अर प्रेम री भरणी मूयती निजर आय रहघी है । अपणातपणा री फुमारो आज मद धेती जाय रहघी है ।

जिकी मानसी आज बारा नू फूलती फळती दीस यो मांय न सू बुम्हलीज रहघी है । उणरै दिमाग री ताकत ती बघती निजर आय रा' है पण हिरदा री बठ घन्नी जाय रहघी है । मिन्नस ती जीव पण मिन्नपणी मर रहघी है ।

मिन्नस रा रूप में आज हजारों, लाम्बा, करोड़ों जीव फिर रहघा है पण वां में साचा मिन्नस किनाक मिळ ला ? आ बात सो टकां सही है क जठ मिन्नस में मिन्नपणा री जोत बुझ जाव उठ अधकार इज बाका रय, अर जठ अधकार है, उठ टक्कर है, उठ स्वारथ है अर उठ इज दुग है । भारत जिता मुन्क में न धर्मा री बमी है अर न मद्राया री न माधुवा री बमी है अर न गुस्वा री । अठ न मताया री ताटी है अर न उपदसका री । ताम पण सप्रदायवाद पथवाद, पोथीवाद, जातिवाद, गुहटमवा प्रान्तवा अर भासावाद रा दानव भारत रा छाती पर मूग दळ रहघा है । इण इज दानवा भाई रा हायां सू भाई नै मरवाय नाख्यो पाङ्गोसियां रा आपस म माया फोडाय नांख्या, एक इज भारत माता र उदर में लोटघोडा लालां र बीच मे महभारत मडवाय दियो । आपां हजारों टुबडा में बटग्या हा आपणा दिमाग में हजारों गांता बणग्या है । आपण विचारा र ओछापण र कारण मिन्नपणा रा टुबडा-टुबडा धैग्या है । आपाण सोचण री तरीकी इज गळत धैग्यो है ।

आपा कोई न पूछा—घाप कुण हो ? तो वो बटमी—
 मू हिनू ह मुसलमान ह जैन ह, पारसी ह मिक्ख ह या
 ईसाइ ह । जातिवाद री भासा में बोलती तो कहती—मू
 घासवाळ, ह पोरवाळ ह अग्रवाळ ह, सेख ह डड ह चमार
 ह, घांवी ह भयवा भोवी ह । प्रातवाद री भासा म बोलती
 तो कहती—मू महारास्ट्रीयन ह, बगाली ह बिहागी ह पजारी
 ह, गुजराती ह या सिधी ह । बीमा तर रा यारा न्यारा
 नाम बताय देसी पण आ री कहती क मू मिनत ह भर
 भारतवासी ह । घणखरी सिखा सस्थावा में सांप्रदायिक
 सस्थावा में, जाति सस्थावा म, राजनैतिक सस्थावा म धर
 व्यापारिक सस्थावा म सब जग आ बेमारी घुस्योडी है । छोटा
 टावर नै श्री भान इज नी व्ही ये मू विसा संप्रदाय, जाति
 भयवा प्रात री निवासी ह, पण माता पिता भर समाज रा
 तोग उणर दिमाग म आछापणै री भूत घुमाय देव । उणम सू
 मानवता निवाळ न दानवता भर देव ।

पण मिनखपणी तो इण सगळा भेदां सू ऊपर उठ न
 अभेद काशी लेजावण वाळो चीज है । जद आपा जातीय
 प्रातीय, मप्रदायी रास्ट्रीय वगर सगळी दीवारी न लाध न
 आग देखणो भर साचणी सरू कर दस्या तद आपणा सगळा
 टटा मिट जासी सगळी सकीरणता उड जासी, सगळा भेदा री
 दीवारा उड जासी, मनडा मिळ जासी हिवहा जुड जासी,
 मन री मल मूठधा मे शुक न ठका दे जासी भर स्वारथ री
 उवाळा बुक जासी । जद आपा सुद न टुवडां मे भेदा म धर

यारा यारा रूपा म दखा, आपण आपसी वर री ज्वाळा सुळण लाग जाव । हिंदुस्तानी पाकिस्तानी न देव अर रसियन अमरिकन न देव नी देवता पाण किरोध री आग धध वण लाग जाव दम री दावाना सुळण लाग जाव । पण मिनखपणा री पवित्र गंगा म सिनान करता इज, मिनखपणा री ऊचो ल'रा हिवडा रूपा सरवर म उठता इज भेद री अ सगळी भीता एक एक करत दह जाव । मानखी सुर अर सतोल री साम लवण लाग जाव ।

मिनख शर मिनखपणा में उतरौ दज फरक है, जितरी व दूध अर दूध री दानल मे । जे आपन दूध पीवणी व्ही ती दूध काई बरतण अथवा दानल मे होवणी जरूरी ह । जद इज ती पी सकोना । ओ मानया-मरीर दूध री खाली बोटन र समान है । जे इण में दूध रूपी मिनखपणी नी है ती वो निक्की है । आप एक मौका री दुकान भाडा पर ले राखी है, उण में अलमारिया, सा केम, टवल, कुरमिया अगर सजाय दो है, ज्वलरी हाउम री साइन बोर्ड (पाटियो) ई आप लगाय नियो है, पण जे उण दुकान में कोई माल नी व्ही, मिराक आव अर खाली हाथ पाछा जाव ती दुकान एक धासाघडी है, उण सू न दुकानदार न फायदी है अर न गिराक न । इणीज मान आप मिनखजमारो पायो, सरीर न बरारी घोर बणाय लियो, भात भात रा ग पा-गाठा सू ई उणन ओपती बणाय दियो पण कोई मिनख आपरो पल्लो भट अर आप उणा नपरत री निजर सू देखी, उणरो अपमान करी, आप र सेठ

पणा री टेंटाई म धायन उणन दुतकार दी, सांभरथ हायती
 यवाई कोई न दुखी देग न ई घांग अनीठ कर देवी, आपर
 हिरदा में मिनख १ देग न घाणद री छौळां नी उछळ
 मिनख पर जात पांत अर संप्रदाय रा बारता सेवल दम्न
 आपर हिवडा रा उपडता पग धम जाव नी कवणी चाहिजे
 के आपर अठ ई ऊची दुकांत अर फीका पखवान याळी बात
 है । आप मिनख ती ही पण मायन मिनखपणी नी है ।
 मानया सरीर रूपी दुकांत ती आप भान भान रा फरनीवर
 सू सजाम राती है पण मिनखपणा हपी माल आपरी दुकान
 मे नी है ।

साचाणो आज मानया री आ इज हालत बडू रही ह ।
 विचार करी के काई आदमी बखाण सुणण न इण बखाण
 पडाळ म आवणी चाव ती वो दरवाजा सू इज मायन आय
 सकला, क्यूव मायन आवण री ओ इज ती मारग ह । जे
 आवण घाळी ओ विचार कर के मू दरवाजे सू होय न मांय
 न ना आवू अर यू इज सीधो पूग जावू ती काई वो अठ पूग
 सकला ? नहीं, उण हठीला मिनख री माधी भीत सू आकळ
 न फूट जावला अर वो अठा ताई पूग नी सकला । ठोक आ इज
 बात घन रूपी भवन में पूगण बाबत कही जाय सक । जठा
 ताई उण रे दरवाजा री ई पती नी लाग, कोई मायन कोकर
 पूग सक ? हा ती घम रूपी भवन म पूगण री दरवाजी
 मिनखपणी ह । जठा ताई जिदगी मे मिनखापणी नी आवला,
 उठा ताई घम रूपी भवन म पूगण री बात पिजूल ह ।

मिनक्षपणी नो होरण रा हालत में धम रूपी फूटरा भवन में पूगण रो पुग्जोर कोमिस रो ई कोई धाम नो सागला ।

आज सू २५०० वरसां पली भरतमह रा महामानव खमण सिंगेमणी भगवान महावीर आपरा चेना बखान में आ इज बात बताई ही । उणा परमायी हो व—धम, साधपणा अर सावकपणा र पनां मिनक्षपणी होयणी चाहिजै । उणां समार रो च्यार दुरलन बाना में मिनक्षपणी सब सू दुरलन बताय न मसारी जीवा नै उपस दीगो ह—

बसतिर परमगणि दुस्हाणी व जनुणो ।

माधुसत्त सुई सदा सज्जमम्मिय विरियं ॥

उराराध्ययन-अ १ गा० १

इण समार रा जावा वासन च्यार चीजां घणी दुरलन है । उण में सब सू प'सो है मिनक्षपणी धारण करणी, उणर पछ बारी बारी सू अण सिरघा अर सज्जम में बळ लमावणी । जे सब सू पली चीज मिनक्षपणी गो आयो तो लारना सगळी चीजो उणमू हजारों कामां आयो है । आज सगळा मिनक्ष भोतिवपण री धारा में बढ रह्या है । कण अर कामणी रा चितवणा म चकरोज रह्या है व मिनक्षपणा नै छाण नै आग वधण रो उजवळ कर रह्या ह वान भगवान महावीर र इण वचना सू ग्यान लवणी चाहिज । आज रो मानवी कोई भी धम रो कटावष घण न मन म गणर राख, कोई भी सप्रणाय र विरिया-करमां रो भावण ऊमो कर न पोता न धर्मांमा मानतो धको मन मं सतान मान, माधु अर सावक बाजण मं इज आपर जीवण री पूरणता समक । पण जीवण री अमला चीज ती मिनक्षपणी

ह, वो नी आयी तो उण री सगळी मणत वात्थी वीज्यो कपास "ह जासी । जिदगी में बरसा तार्द धोटा घुमावण में काई सार नी ह ।

जे किणई मिनखजमारो तो पाय लियो पण मिनखपणी नी आयी तो ग्यांनिया री निजरां स् उण जमारा में घूड ह । मिनखजमारो तो एक खोर न ई मिळधी ह, जो इण अमोलक खोळिया न पायन ई चारी जिसा करम करतो थनी इण न बरवाद कर नासै मिनखजमारो तो एक पातर न ई मिळधी हे, पण धा फगत समाज री जवानो साग गिलवाड कर न आपरा जीवण न बिगाड नांय उण न काई फायदो हुवो ? मिनखजमारो तो एक लिछमोपति न ई मिळधी ह, पण धी दूजा नै चूस न अत्याचार कर दूजा र साग नपरत अर दस कर न आपरी जिदगी बिनाय दे तो उण मानवा-सरीर री काई मोल ? सही बात आ ह के मिनखजमार आय न मिनखपणी नी आयी अर पोता र माय न सूत्योडी मिनखपणी नी जमायी ती सगळी मणत बकार ह । लायां कराहा लोगां नै मिनखजमारो एक धार नी पण अलखा बार मिळ चुकधी ह, पण फायदो काई नी हुवो । वो मिळणी नी मिळण र समान ह । ओ इज कारण हँ क भारत रा मुनी महात्मा मानवा सरीर बरता मिनखपणा न घणी मान दीनी है । उणां आपरी इमरत धाणी में आ इज बात कही ह—

नहि मानुषात् धृष्टतर हि किंचित्

मिनखपणा सू इधकी चीज इण दुनिया में कोई नी ह ।

धर्मा री प्राण है, सार ह । जे कोई धर्म म मिनखपणी नी ह तो वो धर्म दुनिया म कोई काम री नी । वो धर्म मानखा रै वास्तत आप ह । जिकी धर्म मिनखपणा न छोड नै मिनखपणा री परवा किया बिना फलणी चाव, दुनियां र दिल मे वठणी धावै, तो उणरी आ कोसिस बाळू, रेत म सू तेल काढण र समान ह । मिनखपणा रै बिना धर्म धोयो ह, मुहदी ह, कोरो देखावो ह । पण आज सगळा धर्म मिनखपणा नै छोड न, आखा अदीठ करन धामे वधवा री होड कर । इण वास्तत व सगळा धर्म अर धर्मधारी नाजोगा सावत व्ह रह्या ह । धा री हालत बिना तेल रा दीवा जिसी व्ह रही ह । इसी दीवो जिकी माटी री घण्योडी जिकण पर ओपती रम रोगन कियोडी, उण न फूटरा काच रा कपाट म राह्योडी, वाट समेत, पण तेल एक टीपो ई नी । तो इसी दावो काई वखत रास ? ठीक इणीज भात आपा आपणा सरीर न आछी तर सिणगारला, उणन फूटरी, ओपनी बणायला, पाउडर अर श्रीम मू पोत न चमकीली बणायला, गणा अर कपडां सू लादला, एक चमचमाट करती फूटरी कार मे बिठाय दा, घडी, चस्मी अर पेण लगाय लां, पण उण सरीर मे मिनखपणा रूपी तेल नी नांगा तो इसा सरीर सू काई जिंदगी मे रोसणी मिळ सक ? लावो, चवडो, चमकीली, मजबूत अर ओपती सरीर तो अजगर री ई व्ह पण उण सू फायदो काई ? जे आप मे मिनखपणी नी आयी ती ओ मानखा सरीर धरती पर भार रूप है, नकामा है, सर-सरद है ।

आज चाकर मिनख सू मिनख न मिकायन है, मिनख इज मिनख री टोका पर, मानखा री जह बुद्धि मानखा वासत इज भय रूप व्ही रह्यो है । अर मानवता बापडी छेडा बाळ न बोर बोर जिना आभूहा दळ्हाय री है । मानखा री घणी समझणाई राजनीति, समाज अर धर्म सगळी भेळा होय न मिनखपणा न दुनिया सू देसवटो दे दीनी है अर जठ देखी जठई दानवता नस्वरी ह ।

इण कारण इज आज सगळा तत्वग्यानिमा, धमपुरधरा, विचारकां अर समाज र नेतावा री ऋय उडगी ह । व विचार में पडग्या है । मिनखपणा नाम री अमोलक चीज री मानखा में सू जलोप व्ही रह्यो ह, अर्य मानखा री बेजार किया चालसी ? मानखा री घणी किया कायम रहसी ? आज दानवता डक टक करती हस रह्यो ह अर जिनावरपणी ताडव निरत में घूमर घाल रह्यो ह, वी मगळा ससार री यिनास-सीला देखण न उडीक रह्यो ह । इसी अवली बेळा म आषा न मिनखपणा सू संद मेंद राखणी चाहिज उण नै ओळखणी चाहिज, उण री कीमत जाणणी चाहिज अर उण नै पंत देवण म उनावळ करणी चाहिज नहीं ती मिनखपणा हीणी मानखी इज इण ससार न समाज बणाय नाखला । इसा भयकर विचार सू इज न ह में घूजणी टूट जाव ।

मनाल ठळ सज के मिनखपणी इसी काई चीज है ? उण री असली अरय काई ह ? उण न आषा कीकर ओळख सका ? कीकर अणाय सका ? खरोखर श्री सवान विचारण जोय है अर इणरी पहुल्लर आपां नै खोजणी इज पडसी ।

आज मानसा जूण में मिनख री कीमत घटगी ह । मिनख न अठवेळी नास दीनी ह । अथ ती पसा नै, भौतिक साधना न, जातपात न, घोधी मानवता न, रीत भात न, आधी रास्ट्रीयता न, प्रांतीयता न, भासावाद नै अर आधी पिंड पूजा न घणी मान दियौ जावै, उणरी घणी कीमत आकी जाव । इण कारण मिनखपणौ त'स नै स व्हतो जाव ।

जठ धन माल, जात पांत, पथ सप्रदाय, अथ परपरा, अथ प्रांतीयता, अथ रास्ट्रीयता अर आधा भासावाद सू ऊपर ऊठ न मिनख र बार म विचार कियौ जाव, मिनख न मान दियौ जाव, मिनख री कीमत आकी जाव, उठ इज साची मिनखपणौ ह । श्री महापुरुसा री वचण है । जठ विवेक धार न मिनख मिनख साग बोसो वे'धार राख, जठ पसा अर साधन करता मानसा री कीमत वधार आकी जाव, उठ इज साची मिनखाई ह, मिनखपणौ है । मिनख चावै जिण दिस, जात, पथ क सप्रदाय री व्है, जच जिसा कपडा परियोडी व्है, चाव जिकी भासा बोलती व्है, जच जिण गाव, सहर, प्रात क दस री वासी व्है, चाव जिकाई घम पाळती व्है अर उण रा जच जिसाई विचार व्है, छता पण उण न देख न मन राजी व्है उण नै देख नै हिया मे प्रेम ऊगन, उण रा मुख पेटे काळजी प्रगटे उण री जोजवाण पूरो करवा री भावना व्है, उण रा मादीवाड में मदद करवा रा इच्छा व्है, उण न नागी के भूखी देख न हिरदा में दया री भावना पैदा व्हैती व्है, उण री दुख-दरद अर व्याधि देख'र आपणौ हिरदौ पिघळती व्है,

उण रा धामूडा पूछवा री इच्छा धै, उण रा गामाजिव धर
 माली हालत दम न मदद करवा री लागणी धै, ती ममक लेणी
 क उठ मिनक्षपणी है, मानवता है । पण जठ इण सू उन्टी
 हालत धै—मिनक्ष न दख न नफरत, गार, काघ, टगवाडी,
 छळ, कपट मारकूट करण री, मिनक्ष सू परज राक्षण री
 विरती धै उठ ममक लणी के मिनक्षपणी हारग्यो है धर
 मानवता परवारगी है । जठ मिनक्षपणी है उठ परज, अधि-
 कार धर विवक है, बुद्धि री तोन है, लेण-ण है । पण
 जठ फगत परायी माल हृदपवा रा नीत धै, जठ मिनक्ष माट
 पणा सू इज भारा मरै धर आप रा परज न नी ओळम, जठ
 अधिकार धर परज री ताट मेळ नी बठ, विवक नी धै,
 मभ्यता धर भरजादा री मामा म ती सोच्यो जाव उठ
 जिनावरपणी है, जगळीपणी है । उण सू ई दो पायडा धागं
 जठ फगत अधिकारां रा इज भाग धै आप रा परज न धागा-
 धदीठ कर दियो जाव, फगत खाण खावणा धर नाण जावणा
 री इज नीत धै, धूजा सू जवरदस्ता धर दबाण स हृदय कर्वा
 री इज नांत धै, काई न न्या री मनोकामना इज ना धै,
 पातरीज—फगत पोत र पडरीज चिंता धै उठ दानयता है ।
 पण जठ पोता र परज न ओळसियो जाव, अधिकार री चिंता
 नी धै लया रा ठोड दवा री मनावानिया धै, मभ्यता धर
 भरजादा री पूरा पावणा धै उठ दवणी है । इण तर नु
 देवपणी सब री मिरमोड है, दुजी नदर मिनक्षपणा री

ता अधमपणा में मानी जाव ।

मानव सू दानव बणणी मानवता री हार है । मानव सू महा मानव बणणी मानवता री चमत्कार है पण मानव री मानव होवणी मानवता री जीत है ।

जे आप न मिन्नखपणी रावणी है तो द अर 'ले' री सम-तुला रावणी पडसी, विवेक रावणी पडमी । आप रा फरज अर अधिकार री ध्यान रावणी पडसी । आपा न आपणी अतरपट सभाउणी पडमी अर श्री मात्म वरणी पडसा ते कठई आपा मिन्नख नाम धरावता यका काम जिनाारा जिता या रागसा जिता तो नी कर रह्या हा ? आपा म मिन्नखपणी आयी व नी ? या पगत जीवण मं दावता हज नाच री' है ? कठई आपा मिन्नख रूप मे रवता यका दानवता रा काम तो नी कर रह्या हा ? आपा न सरीर ती मिन्नख री मिळियी है, पण मन मिन्नख री मिळियो के नी ? कठई आपा निवळा अर दुखिया पर घीत वागला र ज्यू भयटा तो नी मारा हा, दूजा न डरावण न नाग र ज्यू फूफाडा तो नी करा हा जळीक र ज्यू दूजा री तून तो नी चूस हा, बिच्छू र ज्यू टव मार न दूजा र तन मन न दुखी तो नी करता, मित्री र ज्यू राता डोळा बाढ न घोघरा तो नी करता, मिघ र ज्यू गरजना कर न दूजा री सिकार ती नी करता छाळी नारधा र ज्यू परायी मात ती नी हडपता कुत्ता र ज्यू आपस मे ती नी लडता ? घर म, गाव में नगर म प्रांत म, देस मे अर समाज म दस री आग ती नी सुळ गावता ? लाच लेय न अत्याचार कर न, ठगवाटी कर न, दूजा री खून चूस न अर दूजा पर डाड-पटेली जमाय न

रागसो विरती रा काम तो नो करता ? घमड म घाय न नूजां न घट्टेय घर नीच ममम न घामुरी विरती रा करतव तो नो करता ?

इण तर रा सवाला री पडद वाफा लावा वण मक् है, पण आपणा अतरपट न समभण खातर घर मिनगपणा री जाच-पडनाळ करण खातर अ इतरा ई सवाल माकळा है । आज हरेक दस में दा-बरसी, तीन बरसी अर पात्र बरसी निरमाण रा योजनावा वण रा है । इण काम में मोटा मोटा विद्वान गत र त्ति लाग्याडा है । पण काई मानव निरमाण री योजना र बिना अ भौतिक योजनावा सफळ हाय सकला ? काई मिनग म मिनगपणी लाया बिना दानवता अर जगळो-पणी हटाया बिना मुक् री विवाम हाय सकना ? जे काई दम में मिनगपणी मग्ग्यी है, काई समाज म मानवता दबगी है, काई घम म सू मानवता न निकाळ दी है तो वो देस, वो समाज अर वो घम कर्ई ऊचो नी ऊठ मक् । उण री नीत्र बाळू रत पर लाग्योडी है अर आधी रा एक् ऋपटा सू ई पड सक् है । आप र न-मुख दानवता अर पसुता ऊभी है । या र साग एक कानी मानवता ई ऊभी है । आप ने ण दोनां मे सू एक चीज टाळणी है । आप मानवता गळै लगाइ तो आप री जीवण सफळ छै जावला, आप रा समाज, देस, प्रात, घम अर जात री इ नाम छैना, नी तो आप री मानवता मिटता पाण आप र समाज, घम अर दस र साग आप री इ वदनांमी छैला ।

स्वामी रामतीरथ भारत रा एक मोटा सत व्है गया है, जिणा विदसा में जाय न भारतीय ससकृती री प्रचार कीधी। वार जीवण री एक प्रसंग है। एकर व जापानी जहाज म मुमाफिरी कर रहघा हा। उठै वान भाजन वासत फळा री जरूरत पडी। उणा इण वासत पूरी कोमिम कीधी पण फळ नी मिळण सू निरास होय रै बठग्या। जापानी लोगा र दिला में पोतारा दस वासत घणी अभिमान भरघोडो व्है। व आप रा मुलक र खातर हर वकत मर मिटण न तयार रव। उण जहाज म जाश्रा करतोण एक जापानी विद्यार्थी न पती लाथी क भारत रा एक मोटा सत फळ नी मिळण सू इण जहाज मे भूखा बठग्या है। उण मन में विचार कियै के श्री सत पोतार देस पाछो जासी जद म्हार देस अर इण जहाज री निंदा करगी। जापान अर जापानी समाज र वासत आ एक कळ क री बात होसी। इण वामत म्हने कोमिम कर न फळ तावणा चाहिज। वी उठग्या, थोडा फळ आप र खन सू लिया थोडा आप र दोसतां सू लिया अर स्वामी रामतीरथ रै खन पूग्यी। फळ स्वामीजी रै चरणां में रास'र बोत्यी—'ला महात्माजी आप न फळा री जरूरत ही सो आप इणा न बिना सकोच ले लिरावो।'।

स्वामीजी घणा राजी हुवा, फळ लेय न व वारी कीमत पूछता घना जेव में सू पसा काडण लाग्या। जापानी विद्यार्थी बोल्या—'महात्माजी, फळा रा कोई कीमत नी है, पण जे आप कीमत दयणाज चावो सो भारत पधारो जद आ यान मत वहीजी वे जापानी जहाज खराब व्है उठ फळ नी मिळै।

आप म्हारा दस री बदनामा री पुढीकी इण दरिया में इज नारा न जाइजी । साथ मत ॐ जाइजी ।'

आ बात सुण'र स्वामीजी अचभा म पढग्या । जापानिया री मिन्वपणी देख न मन मे वारी तारीफ करण लाग्या । इण बात कोई भी देस री आदमी आप री मानवता न कायम राख न आप र दस री नाम बढाय राख अर मानवता न छोड न आप रा देस न बदनाम ई कर सक ।

महात्मा गांधी विदसां म आप री मानवता कायम राख न भारत री नाम बढायो अर भारत रा विद्यार्थिया मानवता छाड न देस री नाम बदनाम कियो । बात यू बणी—एकर एक भारत री विद्यार्थी पढण नै लदन गयो । वी साइस री विद्यार्थी ही । एक मोटा पुस्तकालय सू वी पोथ्या लाया करतो अर पढघा करतो । एकर वी उण पुस्तकालय सू इसी पाथी पढण न लायो क जिण में मनीनरी रा भात भात रा नकसा अर चित्तराम त्रिवोडा ह । विद्यार्थी री मानवता उढगी अर दानवता नाचण लागी । उण सोच्यो—'इतरा माटा पुस्तकालय म सू अर इतरी ज्यादा पोथ्या म सू ७ एक पोथी म सू चित्तराम अर नकसा फाड लिया जाव अर पाथी पाछी देदी जाव तो कुण दरण न बठघो है ?' लालच विद्यार्थी पर सवार बह्यो । उण पाथा मे सू चित्तराम अर नकसा फाड'र पोथी पाछी जमा कराय दी । पुस्तकाग्य र अव्यक्त उण भारत रा विद्यार्थी पर विसवास राख न त्रिना देव्या ई पोथी जमा कर न अल मारी में राख दी । एक दो दिन पछ उठा री इज कोई विद्यार्थी

वा इज पोथी लेखण न आयी । अलमारो म सू गोवी निवाळ न
 वो विद्यार्थी उण पोथी न उलट पुाट न देखण ताग्यो तो
 उण न व चितराम अर नरुगा निजर नी आयी । उण पुस्त
 कालय रँ मध्यक्ष सू पूछ ताछ कीवी । मध्यम बोत्यो—'इण
 पोथी नँ आमां न अवार थाडा दिन इज हुआ है । दो दिा
 पैला इज एक भारत री विद्यार्थी आ पोथी जमा कराय न
 गयी है । जरूर उण इण में सू चितराम अर नकसा पाडधा
 हासी । पाथी जावक नवी ही अर दूजो बोई ल नी गयी हो ।'

उण री सक पक्की व्हेम्मी । भारतवासियां पर सू उण
 री विस्वास उठग्यो । उण पुस्तकालय र वारणा पर बोड
 लिखाय दियो—

No entry for Indians'

भारतवासी माय न नी आय सकें । गळती कीवी एक भागल-
 वासी पण ठाकी लागी सब भारतवासिया र अर बदनाम हुवो
 मगळी भाग्न देग ।

बाई इसा सूटोटा काम सू पुरी दस बदनाम नी हुओ ?
 आज मगळी सत्ता सावधान हुयाडो है । वो आप रा वारता
 लयन्, साइन बोड, के टू ड मारका न गी दख । आप किसा धर्म
 नँ मानण बाजा नी किता देस रा वागी हो किमा बुद्ध रा
 सपूत हो, किसी जात रा हीरा हो अरे मगळी बाना कीई बक्त
 गी रास । वो तो आप न मिनसपणा री कसोटी माथ बस न
 इज भला भूडा कहसी । आप र मिनसपणा री परीक्षा कर
 न इज आप री कीमत आकसी । उठ जात पात री धमड

सप्रणय ही दुष्ट मार्गों घडवा निनव १ गा ही मादून हाण वाम
 नो घावना । एणां मू घ ३ गी मनायणी कायन नो धूँना ।
 भन ई घाण र घर में घरबां सरबां ही घर है, घाटरी में
 पाण्या ही म्यान दबाय-त्याय न भरवाटी है, वेहुरा घर बीम
 पाठकर पो-रोनी है, घम पर मग विरगा यमकीरा, मडवाना,
 मगा न कुंरा कचटा पण्योडा है घाण रा हाजरी में हजारा
 नोकर टोण रह्या है, घाण रा कठ बारगीना दनायन वाठ
 रह्या है घाण ही निजारी में माना घाण रा दिग् मगायाडा
 है घाण ३ मिळण वाळां ही कवार मगायाडा है घाण पजूना
 पर लपणा ही टाट लगाय दयो ही घाण घटा लाद मरां ही
 भडा मगाय देरो ही घाण काड नि पूजा वाठ निज-नम घर
 हाम-जाय में परक नी घावण ना ही, पण मिनायपणा ही लोच
 इन चात्रां मू ना धूँ मिनायपणी इन बाटां मू तो लायी जा
 सव । मिनायपणा नी लालण मगाय दूजा इन वाट वाम में
 घासा । मिनायपणी भागणी मू, घायो नेगागिरी मू पडावणी
 मू घयवा राजनाति मू ती परन्वी जा मक मिनायपणा ही
 कपोटी मिनाय ही ववार इज वण मक । मान लो एक
 घाणमा मनीरा रा ३०) ४० कमार, ली मान भर मे उगरी
 पूरा कमाई ८४०) ९० हई । ज लो गाठ वरगी लाई वरावर
 कमावनी रेंव ली ५०६००) ६० कमाय मक । घा उण र पूरा
 जिदगी रा पूजी है पण एक हारा रा बीमन एक मान
 रविया तक धूँ सव । घड घाण इज वहाणी क मिनाय रा
 बीमत घणी हई क एक हारा रा ? ज टा मगाय न गाटा
 टडा दिमाग मू लोच्यो जाव लो पती मगा आवना क मांगना

री कामत होरा सू घणी है । आ बात मान ली के हीरो लास
रपिया री है, ताम पण होरा न परखण वाली उण न बेचण
वाली अर लेवण वाली मिनख इज है । आ बात ध्यान में
रैवणी चाहिज के हीरा करता हीरा री पाग्यी मोटी छै ।

जे मिनख म मिनखपणी आय जाव तो हीरा रा उजाम
न ई भासो पर नाख । मिनखपणा रा उजास सू इज मिनख
री कामत बधे । इण रे बिना मानवा सरीर री कीमत धैती
ती मुडदा न लोग बेच नाखता या घर म राख लेखता ।

पण आज रा जुग म मिनख करता पस री कीमत घणी
है । जे एक कानी कोई मिनख मादो पडघी पीडा मू बुरळाय
रहघी छै अर दूजी कानी उण र रान इज एउ सिनरी पडघी
छै, ती मानसा री हाथ उण मादा मिनख कानी नी बढ नै
पैली सिक्का कानी इज बढता । उण मिनख न नो पण
सिक्का नै छातो मे बेपण री मन होवता ।

एक दिन वन म जावना देग्यो व एक आदमी मडक र
बिनार तावड पडघी है । बपडा फाटाडा हाडका निनळघोडा
अर ससार म घडो पनक री पावणी है । सडक पर भीड भरपूर
ह । निरा ई मिनख आय जाव रहघा हा । व गगळा उण कानी
देगता अर आग रवाना होवता । उणी बसत एक चमचमाट
करता मोटर पवन र पाण आई अर पाणी र रेला र ज्यू
चातनी चालती एकदम रवणी । उण म सू दी मिनख
उतरघा अर नाचा दखता-दखता पाछ कानी गया । छेवट
वान वो रपियो मिळग्यो जिकी उणा मोटर में बठघी पडघी

देम्यो ही । स्मात व इण कारण इत मोट्टर सू उतरघा व्हेना पण उण माण आदमी न दग्य न ईनी देम्यो । वारी निजर में मिनस करता सिता रा कीमत घणी ही ।

वस अठ इज मानवता हारगो घग् जिनावरपणी जीनम्यो । जठ अवस्था पळ म ई मानवता हार न दानवता र चरणा म नी जाव, उठ इज माचा मानवता ममभणी चाहिज ।

पजात्र र काकड पर आयोडा एक सर री घात है—उठ एक हिंदू डाक्टर घणार बरसा सू रट्टा करतो । उण री प्राइ-वट प्ररटिम चोम्बी चालतो । व हिंदू मुस्लिम दगा ग दिन हा । हिंदू अर मुमठमान मिनसपणा सू हाथ पाणी लय न मगह्व, जान अर देस र नाम पर घून रा होळी येन रह्या हा । उण वधन गुडा न आय री दानवता दिग्गण री मोकी मिळथो । उणा इण मोका पर लूग-ग्यामी कर न लाभ उठा-वण री माचो । मिनस न बरवा करण री वान न कर दा । व मोघा डाक्टर र घट्ट आया अर उण पर हमली बात्र शियो । डाक्टर रा कार जठाय नागो, घन माल लूट लियो लुगा अर लटका न वतल कर नाथो । इण र पळ व मफाळाता म पूगा जठ डाक्टर वठथो ही । उणा आवता अज घडाघड अल मारिया पर भाटा फेंकणा माट्या । इण सू कात्र रा टुव्या उळ्या अर सीवा गुडा र सरीर में जाव घुम्या । गुडा घायल हाय न माचा पडग्या । डाक्टर इण मोका पर ई मिनस पणी नी छोटथी । वी चुपचाप वठथो सगळी तमासो देग रहथो ही । गुडा न घायन देखर उणरें मन में बदळो लक्षण

री कोई भावना नो ऊठी । उल्टी उणरी रग रग मे मिनसपणी जागण लाग्यो । वो ऊठयो अर घायला नै प्रम सू कवण लाग्यो—'भाइया ! ये घवराइजो मत । जो हुयो सो हुयो । म्हु अवार काच रा इण टुवडा नै काढ़'र मल्हम पट्टी कर दला ।' वो मानखा प्रेमी डाक्टर वार सरीर मे सू काच रो एक एक टुवडो वार निकाल्यो अर घाव धोया न मल्हम पट्टी कर दी । आ मल्हम पट्टी वारा घायल दिला पर ई मल्हम-पट्टी कर रो' ही ।

काई आप ई उण डाक्टर र ज्यू मानखा रा बुभयोडा अर दुखी दिल पर मल्हम पट्टी करण रो काम करी ही ? कड कडाती ठड म घूजना मिनस नै देख न आपरो आ इच्छा हुइ है के आपर सन जो फालतू बपडा है, उणन देय दा । कोई गरीब विधवा वन न दुखी देख नै आप उणरो जघाजाग मदद करी है ? कोई अनाथ निराधार न दुखी मिनस रो भली करवा सातर आप कडई कोसिस करी है ? जे इण सबाला रो जवाब हू कारा म हाव ती समभणी क आपरें सून म हाल सस्वार मौजूद है । जिण मिनस री नसा मे मिनस-पणा री घटकण सुणीजती व्ही वो इज साचो मिनस है ।

एक गरीब कृट्टुम ही अर उणरी पेट भराई करवा वाळो एक इज मिनस हो । वो आखी दिन म'णत मजूरी कर न कृट्टुम री पाळणा करतो । एक दिन उणन खावण न कम मिळ्यो । दूजोड दिन तन तोड नणत करण पर ई भूखी रवणी पड्यो । तीज दिन पण श्री इज हात रह्यो । छेवट भूस सू वो मादी पड्यो ।

उणरी मा बापही बडो चिंता म पछी । सुख पूछण न पाडीमो
 आया । किणई कह्यो—इण न डाक्टर पने लेजावो, किणई
 कह्यो—इण न विदामा गे सोरो खवावो, किणई कह्यो—इणन
 दूध रा खोर् पावो, पण किणई आ बात नी कही के ऊमा रही, अ
 सगळी चीजा म्हूँ लय न आऊ । नव री मानवता नीद म सूती
 ही, पण मा री ममता मा इज जाण उणरा गळा मे एक
 छोटासोक सोना री मादळियो ही । वा मादळियो लय न
 डाक्टर खन पूी अर बोली—‘डाक्टर सा व म्हार एकाएक
 वेटी है उण बिना म्हारो गरीब कुटुम भूया मर जावला म्हे
 निराधार है जावाला, किरपा कर गाप म्हारो श्री मादळियो
 लिरावो अर ठणन वचावो ।’ डाक्टर वाल्यो—‘मा चाल, म्हुं
 थार साप चालू ।’ डाक्टर उणर साग भूपडा मे पूगी जट
 डोकरी री वेटी सूती ही । डाक्टर उणरी पूरी तपास कोवी
 ती उणन माजूम हुनी के निवाय गरीबी र उणरें तूजी कोई
 राग नी ही । गरीबी इज उणरी सब सू मोटी रोग ही ।
 डाक्टर जेव म हाथ घाल्यो अर १७००) ६० रा नोट
 निमाळ’र रोगी र हाथ म दवती बोयी—ल भाई आ थार
 रोग री अमली दवा है । नाट मिळण सू रोगी ठीक व्हेग्यी ।
 इणर वाद बी वपार करण लाग्यी । थाडा दिना म इज उणरी
 वपार ठीक चानण लाग्यी अर उण लाग्ता रुपिया कमाय
 लिया । बी पचास हजार रुपिया लेय न डाक्टर खन पूग्यी
 अर बोली—‘आप म्हार राग री सही इलाज कियो ही ।
 आप मानव नी पण महामानव ही । म्हारी आ मामूला भट
 खोकार करावो । डाक्टर म मिनखपणी इज नी पण देवपणी

मोजूद हो । वी पचास हजार रुपिया पाछा दवती बोल्यो—
भाई, इणा ७ ले जाओ, म्हार नी चाहिज । म्हन म्हारे
मिनसपणा रो वपार नी बरणो है । छेवट उण डाक्टर सा'व
न चारी फीस भर (१७००) २० दडी बीणती कर न पाछा
सूप्या ।

साची बात आ है के इसा मिनसपणा रा मणी आपा र
दस में ती काई दुनियां रा आगणा म ई कितराक है । ताम
पण बठई-बठई इमा मिनसा रा दरमण म्है सख ।

हिंदी रा मानीता महाकवि निराला जिणा रो पूरो नाम
सूयबात त्रिपाठी निराला' हो, व दुनियां न दस न आपरो
पड होमवा न तयार व्हे जावता । एकर निरालाजी न महा
दवी वर्मा ठड में घूजता देख्या । महादेवी रो हिवडी भरोज
ग्यो, व समभग्या के इणा पोता रो ऊनी कोट काई गरीब न
दे दीनी है, इण वासत महादेवीजी एक नवो ऊनी काट सिवाय
ने लाया अर निरालाजी न दवता वात्या— देखो, ओ कोट
आपरो नी म्हारो ह । म्हें फगत आपरें पड रो रक्षा सातर
करवायो ह । इण वामत म्हारा हुकम बिना आप ओ कोट
कोई न 'ी दे सकौ ।'

थोडा दिना पछ निरालाजी महादेवी र निजर मू आघा-
आघा खण लाग्या, पण महादेवी रा दयाळु निजर सू काई
छिप्योडो ही । उणा निरालाजी न मिळता इज पूछ्यो—'भाज
आप कोट नी परयो ।' प'ली ती उणा गाळ मोळ पडुत्तर
देवण रो कोसिस कीवी, पण अनुभवो आस्या सगळी बात

खोल न कही—एक दिन एक मगतो साफ उधाडो बठघो ठड में धूज रह्यो ही । म्है देख्यो म्हारा सूनू ज्यादा बाट री जन्मत इणन है, सो म्है तो उणन को सूप दियो ।’

आ मिनसपणा री साची तस्वीर है । जद मानग्या र हिरदा म मिनसपणो कायमी वसवाट कर रवना उणने एग पलक वास्त डनी भूलला, उणर मन में मिनसपणा री गूज गूजती रवला, उण टेम इज इण दुनिया में मूल अर साक्षी री बचारी व्हेना उण वखत इज गरीमाइ रा बाण्ड बिम्बर जावला अर सुख री सूरज चमकना । एग मोका एग इज मिनस नै छाठ मिघ अर नवनिघ मिळना विशी धाण अर आवना अर राहूटा, जातिया नै मप्रदाया र निरमाण री सपनी मागर व्हेना ।



आचार अर विचार

आपां रो आध्यात्मिक प्रम चावो है । सतार रो कोई पण देस आध्यात्मिक विकास मे आज ताई आर्याव्रत रो बराबरी नी कर सकयो । आर्याव्रत रा ग्यानिगा आत्म तत्व रा कृता मम न जाणवा ग्यानर अथाग कोमिस कीयो अर उणमे वा न पूरी पूरी सफलता पण मिली । भारत रा तत्व चित्तका र विचार रो तास के द्व बिदु आत्म विकास है । व यारा-यारा मारगा रो आमरो पकड न उणरा हर पासा पर विचार कर नै छवट आत्म विकास रो धुरी पर इज पहाच्या । या न जिन विचार में आम विकास नी दीयती उण न ब छोड देता । आत्म विकास रो अरथ है—ग्यान, दरसन अर चरित्र रो विकास करणो, आचार अर विचार रो विकास करणो, सरूप रो विकास करणो, आत्म गुणा न बधावणा, यान अर किरिया रो विकास करणो । जठा ताई इणा रो विकास ठीक हालत म थैला, उठा ताई आध्यात्मिक क्रांती नी थैला ।

भारत का अरक्षण सम्पन्न में कईक दरमण सास्त्र पत्रान
 ग्यान न इज मान देव धर केईव कम न । कईक साम्प्र कव—
 'कृते जानाप्र मुक्ति' कयता ग्यान विना मुक्ता—साध्यात्मिक
 प्रगती ना व्हे । ती कईक दरमण मान क करम मू दव मोण
 मिळ । वा रो कयती है—पान भार किया शिना शिना
 विना रो ग्यान भार-म्प है ।

याप दरमण रो कयती है क कारण रो नाम ह्मण
 इज काम रो पप नाम व्हे । जगत रो कारण है याली म्पण ।
 यायी ग्यान नष्ट होवण मू दुख, जतम पणर गण ई नष्ट व्हे
 जाव । तत्व ग्यान मू दुख रो नाम व्हे धर मोण मिळ ।

साम्प्र दरमण कव—जटा ताई प्रयता धर पुण्य रो
 विवक ग्यान नी व्हे उटा ताड मुगती नी मिळ म्क । उट
 प्रशनी धर पुण्य र धीचता न्प रो ग्यान ठान, इण दुख
 पाना रो ज्ञान न निमग निरम्प धर यारी मान क म्पण
 न यारी गिण न्प विवक ज्ञान धर मान रो काम दिनेक
 इन है ।

यमेसिक दरमण साम्प्र कव—उटा धर इण इण
 धपम धर मुण-दुख रो कारण न् । दरमण म्प धर
 दस मू धाधा रव इण काम्प इज कं म्पण न्प धर
 व भायी कमा रो विरोध धर धर म्पण इण इण म्पण
 धाग म नष्ट धर न मोण न पूण । म्पण म्पण
 मान रो मारण है ।

पायडा री जफरत न्हे । जे पय्गेरू री एक पाग टटो भागी व्हे तो वो आभ मे गो उड मक् चाव यो कितरी ई फोसिस कर पण सफळता नी मिळ मक् । उणा तो गफळता उण वखत इज मिळ ना जण उणरा दानू पांस मजबूत अर सागो पाग व्हेला । टीर इणोज नात एक माधय न आपगे जिदगी मे सफळता उण वयत इज मिळैला जद उणरो आचार अर विचार रुपी दानू पांसा मजबूत व्हेला ।

बिजली रा दा तार व्हे—एक नेगेटिव अर दूजो पोजिटिव । जठा ताई अ दोनू तार धारा रव उठा ताई आपरा कमरा मं जगमगाट नी न्हे सक, पयो आप न हवा गो घाल सक, रेडियो आप न मोठी राग नी सुणा मक्, हीटर आपरो पांणी गरम नी कर सक । आप जत्र जितरोई बटण दवावी पण कोई गरज नी मज सक । पण दोनू तार मिळता पाण बटण दवावता इज उजाम मचादरणी कर दला, पयो ताचण लाग जावला, रेडियो मोठी सुर सभळानला अर हीटर पांणी गरम कर दला । ठीक इसी इज जीवण एव माधय री पण व्हे । ज उणरा जीवण मे आचार अर विचार रुपी दा तार नी व्हे तो आध्यात्मिक उजास नी फल, प्रगती री हवा नी वक् ससार न आध्यात्मिक सगोत री सरावळी नी साभळीज अर माधना मे रग्मी नी आव ।

वग्यातिका री आ मानता हू के आवसीजत अर हाइडोजन र सजाग स जळ तत्व तयार व्हे । इण दाना री सजोग नी होव तो पाणी तयार नी व्हे सक । पाणी बिना जीव री

किसी'क हानत व्हे इण घावत घाय यल्पता कर सरो हो । इणीज भांत आचार धर विचार इण दाग रा संजाग मू जीवण रणा जट तयार व्हे सक । इण दोना री मजोग नी व्हे ती जीवण म साधना ग प्राण ती घाय सभ धर जीवण री एक तर सू आध्यात्मिक मीठ व्हे जाव । टावटरा री कथण है वे आपर मंगर में दो तर री तावतां है—मन्धपुत्र- स्ट्रेंथ धर मरवस स्ट्रेंथ । आपणी भासा में यां न मरग री तावत धर ताडा री तावत कय राहा । शे दानू तावतां सरीर म एव मरीमी है जर आपणी मरीर निगम धर मस्त रेंव । सरार न मजपून धर आपद पूरण रागवा वासा म तावतां जम्हरो है । इणीज भात आत्मा री निरोगता धर मरती सातर ग्यात धर कम कवता आचार धर विचार गररा है । इण दानां तावतां री एक मरीसी विवास व्हे जर इज आपणी आत्मा निरोग धर मस्त रेंव राव । इणा मे सू एक री वेणरवाही वगता चर्का जो आपो जीवण री निरमोण वरणो चावां उजळीं मिनसपणी रासणी चावां ती धा वात आपामा पन जिमी धरगभव है ।

जीवण रा मम न उभाडतां चथा महाकवि जयरावर प्रसाद कामायणी रा रहस्य मरग मं ठीक एज वही है—

ज्ञान धर कुत्र क्रिया भिन्न है इच्छा क्यों हो पुरी मन की ;
एक दूसरे से मिल न सक, यह दिखना है जीवन की ॥

आप देखो व्हेला क म्ठियाळ र दो कांटा व्हे । एक कांटी साठ मिनट म आग सरव धर दूसी कांटी साठ सेकड में

आग सरक अर साठ मिनट म पूरौ चक्कर लगायल । ओ दोयू काटा ठीक ढग सू चाल जरै इज घडी ठीक समय बताय सक । दोनां मे स एक कांटी नी छै या ठीक ढग सू नी चालती छै ती घडियाळ ठीक टेम नी बताय सक । उण हालत मे घडियाळ मांदी गिणीजला अर घडीसाज न उणरौ इलाज करणौ पडता । ठीक इणीज भात आपण जिंदगी मे आचार अर विचार रा दोनू काटा ठीक ढग सू चाल या दानू काटा म सू एक खराब छै जाय ती आपणौ जावण रूपी घडी आगै नी बढ सक । उण हालत म आत्म सुद्धी या तपस्या सू जिंदगी रूपी घडियाळ री बलाज करणौ पडना ।

आज म्ह देखू के आपणा सामाजिक जीवन में खूब गड-बडी चाल री' है । एक बानी पढाई री भार बढ रह्यौ है । विद्यार्थी पाठ्या रँ बाकू सू दबग्या है । वा रा विचार इतरा आग बधग्या है के समाज वा रा विचार न पकड नी सक । जूजा बानी बार आचार अर विचार री श्री हाल है के व मौज सोक, भागवाद अर फसन अर ग्राबण पीबण न इज जिंदगी री असली सुख समझ । चन री वमौ बजावण म इज वा न जोवण री आणद आव । इणीज भात जिज्ञी पुराणा विचारा रा जूता मिनरा है व आपरा अध सिरघा-पूरण पुराणा विचारा न इज पकड न बँठघा है, पण आचार रा क्षेत्र में ब इ घणा लार है । व 'पडी कमणौ करती बसत वेवार मे कियोडी भुला अर पापा री उच्चारण कर न 'मिच्छा मि दुनकटम' ती देदला पण जिंदगी में आ चीग नी उतरता । धम स्वान सू बार निकळघा पछ जीवन रा मदान में थारौ

वो इज रवयी रवला जिकी के पला ही ।

श्री इज कारण है के जवाना री आचार सू सिरया घोर घोर कम है री' है । भारत वासिना र जीवन में आचार अर विचार ग अलगव में एक उपाण सो आययी है । केईक लोग विना विचार आचार न पकडघा बठघा है तो केईक लोग विना आचार विचार रा पूछ पकड राखी है । समाज में दोनों री ताळ-मेळ तिवर नी आय रह्यो है । श्री इज कारण ह के आज आपणो आध्यात्मिक जीवन रेगिस्तान जिसो हाम रह्यो ह, मर भूमि रा मिरग तिमणा र ज्यू आध्यात्म री आहतर जरूर दमण न मिळतो पण उणर मन जावण सू आध्यात्मिकता नाम री कार्द चाज उठ नो मिळतो ।

एकर अद्वतवाद रा एक मोटा विद्वान भारत म घूम रह्या हा । उणा अद्वतवाद भणियो तो घणोई ही पण गुणियो नो ही । एक दिन फिरता फिरता एक भगत र अठे जाय पूगा । उण दिन जोर री सरदी पड रो ही । भगत पूछियो—'मनांन करण न पाणा लाऊ, महाराज ?'

बदातीजा हस्या अर बोल्या—'था में कार्द अकक न ना है, जठ ग्यान गगा खळ खळाट करती बय रही है, उठ सिनान री कार्द जरूरत है ?'

भगत पण काची नो ही । उण बदातीजा री आछी तर सू परीक्षा लवण री विचारा । उण घर जाय न आपरो लुगाई न बढा पकीडा बणावण री कह्यो । बदातीजी न भगत अपर घरो लेग्यो । सूत्र आगता सागता करी अर भोजन कराओ ।

भोजन करघा पठे भगत वान आराम करण वासते एव कमरा मे लेग्यो । वेदातीजी पीढग्या । भगत मौकी देघर दरवाजी वद कर दियो अर बार बूटी लगाय दियो । वदातीजी गरमा - गरम पकीडा गाया हा इण कारण वान जोर रो प्यास लागी । अठो-उठो देख्यो तो भगत उठ पाणो नी घरघो ही, मो छेजट वेदातीजी ऊठ १ दरवाजी भचीठघो पण भगत रो घाई पडुनर नी मिळघो । व जोर सू वाल्या—'अरे भाई, म्हने तिरम जोर रो लागी है ।

भगत बोत्यो—'महाराज ! ग्यान गगा बय रो है, उणमें सू एक लोठो भर न प्यास बुझा तिरावो ।' वदातीजी समभग्या अर मन म साच्यो व सर न सवा सेर मिळघो तो ग्यरी । उण हारर भगत सू माफी मागी । भगत दरवाजी खोल्या अर पाणो लाय न प्यास बुभाई ।

इणीज भात रा याथा ग्यानवादी आज दुनिया में अर शास कर भारत में घणा च्छैग्या है । वासू समाज में विचारा रो तरबकी रक्की ह । जहना अर गर जिम्मेवारी वधनी है । आचरण रो तो काळ इज पडग्यो ह । आज आपा नै आपणी इसी फोरो हालत पर विचार करणो पडला वे दरअसल मे आपा अर आपणी देस तार धू रग्यो ह । दूजा देस आध्यात्मिकता रो डान नी कूट, साम पण ईमानदारी अर नैतिकता में आपण मुनक सू आग उध्योडा ह । इणरो कारण ओ ह व वार विचार गर आचार में ताळ मेळ ह । धारी वधणी अर करणी एव है । इण कारण इज धारी जीवण ऊचो ऊठघो । अठ वठघा विद्यार्थिया सू म्हू एक सवाल पूछणी

चाबू के 'राम जाता है' इण वाक्य में कता कुण है घर क्रिया किमी है ? साफ ह के 'राम' कर्ता ह घर 'जाता ह' क्रिया ह । जे पगत कर्ता इज व्ह घर क्रिया नी व्ह तो काई वाक्य बण सक है ? वाक्य न पूरी बणावण वामत कर्ता घर क्रिया दोन जरूरी व्ह । ज कर्ता व्है घर क्रिया नी व्है तो वाक्यपूरी नी बण सक घर न उण सन्दरं री कीई अथ ई निकळ सक । जिदगी एक वाक्य है घर वो जद इज पूरी व्है सक जद आपा म्यान न कथणी सू करणी में उतारा ।

बहीदा री एक बात म्हन पाद आव । सर मयाजीराव र सभापतिपणा म एक विगत सभा होव री' ही । उणमें अहिंसा पर भासण राखी गयी हो । एक मद्रास बानल, विद्वान री भासण इतरी बढ़िया घर इतरी मनमोवणी हुयो के लोग एक ध्यान सू मनरघाडा व्है ज्यू सुण रह्या हा । पटाळ ताळिया री गडगडा ट स गूज रह्यो हो । भासण देवता देवता विद्वान री सरोर पमीना सू भवाण व्हग्यो । उणा जेब में सू रमाल काढण न हाथ घाल्यो पण व वालवा में इतरा मगा व्हग्या हा के रमाल काढती बल्लत धारी जव में सू अणजाणपण दो इडा पण वार पडग्या । वान दस्तता ई सगळा लाग भवमा म पडग्या घर कवण लाग्या—'अहिंसा पर इतरी गभीर बाता कवण घाली आदमी ई इ डा भाव ?'

अध्यय पद सू भासण करतां थका सर सयाजीराव बाल्या—'इसा लोगा सू इज मुलक री सत्यानाम हुवो है जिर्गारी कथणी घर करणी में बडी भेद है । विचार र साग जिवा र जीवण म आचार नी व्ह व वारा भासण भट्ट व्ह ।

ग्यान र साग आचरण करणी ई घणी जरूनी है । भारतीय ससक्रिती रा विचारक सू एक साधक सवाल कियो— 'भगवान ! ग्यान रो फळ काई है ?' विचारक पढुत्तर दियो— 'ज्ञानस्य फल विरति' ग्यान रो फळ घुरा कामां सू घाघी रेवणी है । धमदास गणि उपनस माळा' म कही है— एक गधो है जिणरी पीठ पर असली चदण लाद दियो जावै, जिण मे खूब सुगधो है, फूटरापी है, ठक्क है पण गधा रे वासत तो इण सगळी चोजा री कोई कीमत नी है । उणर वासत तो ओ भार रूप है । इणोज भात जिंकी साधक ग्यानी तो है पण आचरण बिना रो है उणर वासत वो ग्यान भार रूप है, थोथो है, काई काम रो नी है—

महा खरो चदण भारवाही भारस्त भागो न हू चदणस्त ।

एव ख-नाणो चरणेण होणो नाणस्त भागो न हू सुगइण ॥

—उपदेगमाळा

महात्मा बुद्ध एक बात रूपक म कही है—ज्यू गाया चरावण वाळो ग्वाळो दूजा रो गाया न चार, वो गाया न गिण सकै पण मालिक नी घण सक, दूध नी पी सक । इणोज भात जो थोथो ग्यान बाफ वो इण आचरण रो, अनुभव रो स्वामी नी है । वो फगत पीथ्या गिण सक या दिमाग म ग्यान न टूस सक । जिण तर स चमची भात भात रा भोजना म फरघी जाव पण वो रम री अनुभव नी कर सकै, इणोज भात कोरो ग्यान बाफण वाळो अनुभव रस रो, आचरण र आणद रो स्याद नी ले सक ।

इण वासत जिण तर सूरज अर उजाम दोनू साय-साथ

रत, उणी तर ग्यान अर क्रिया, आचार अर विचार दोनू नाग
रबला, जद इज आपणा जिदगी साधना र तप सू चमकण
लागला ।

धन्यतरा लोग राता मोटी मोटा बणावैला, विचारा में
आपन जीतण नी दबला पण जठ आचार पर अमल करण री
सवाल आवला, उठ फोड़ न कोई बहानी बणाव न टरक
जायना । श्री मानव्या री माटी दुरभाग है के वो विचार न
आचार री रूप देवती धररोज । केई लोग विचारा न सामळती
वगत धनी सहणसीळता बताव को साधक वार मामन कोई
विचार राख, उण वगत नी उणरा हा में हा मिळाय, उणरी
तारीफ रा पुळ बाध पण जिण वगत उण विचारा पर अमन
वैणी सरू हाव व इज लाग उणरा विरोधी बण जाव ।
विचारा सू सहमन अर काम सू अमहमत विचारा सू राजी
अर काम मू वे राजी ढावण बाळा श्रीमाना री मन्या समाज
में कम ना है अर जठा तक समाज म विचार अर आचार री
दुभात है उठा तर इणरी गाडी कादा म इज फग्घोडी
समभणी चाहिन । इण कारण इज विचारा न आचार री रूप
दवता समाज जिवा मानसिक निबळई बताव । हागत न
उल्टी कर देव या ई ग्या सू उठ इज अन्क्या रवणी चाव, श्री
भयकर रोग है । हिसाव सू आचार माध्य है अर विचार
साधन है । जठा तक आपा कोई विचार न आचार रूप म काम
में नी उताराला, उठा तक उण विचार री काई कीमत है ?
इण वामत जे विचार र माफक घाडी धनी ई आचार व्हे तौ
समाज न तरक्की धरता टम नी लाग ।

महाभारत काळ मे दुरजोधन मोटो राजनीतिग्य हो ।
उणरी गज सभा में मोटा मोटा विद्वान, सास्त्री, इतिहास रा
जाणकार, अथ सास्त्री अर राजनीतिग्य हा । सगळा लोग
सास्त्रा री मधण कर नै उणर आग निचोठ राखता पण दुरजो-
धन पगत एक इज वात कह्या करतो—

जानामि धम न घ मे प्रवृत्ति ।

जानाम्य धर्म न घ मे निवृत्ति ॥

म्हू धर्म न जाणू हू, पण उण पर चाल नी सकू । म्हू अधम नै
पण जाणू हू, पण उणसूं अळगी नी रय सकू ।

पगत रोपडी म किताबी ग्यान ठूस्या सू इज जे कोई
मिास ग्यानी बण जावतो व्हे ती पुस्तकालय रा अलमारिया
पण ग्यानी बण जाव । एक रोमन तत्ववत्ता र आग एक
लयाड (वाचाळ) डोगा भारती बोल्हो— म्हू कई मोटा मोटा
विद्वान दर्या है अर वारें साग वातचीत पण कीवी है ।'
तत्वचित्तक पडुत्तर दियो— भाई, म्हें पण अनेक धनपतिया न
दर्या, वार साग वातचीत कीवी पण इणसू म्हू धनयान नी
व्हे सक्यो ।' स्वामी रामदास कह्यो है—

समभलें घाणि घतलें ते चि भाग्य पुरप भाले ।

यर ते बोलत घिरा हिले करटे जन ॥

भावाथ श्री है के—जिकी भाग पृटो है वो पगत बाता
इज कर, पण भागधारी वो है जिकी विचार न समझ अर उण
पर अमल करे । एक सायर कह्यो है—

खदा का नाम गो अक्षर जबानों पर है आ जाता ।

मगर काम उतते जब चलता कि वो दिल में समा जाता ॥

सजम री चमतकार

भारत एक कसी (सिती) प्रधान इज नी, रिसी प्रधान
 देस पण है । अठ केई आत्म ग्यागी रिमी महात्मा व्हैग्या सत
 महत व्हैग्या । जिकी पोत सजम री साधना तप री आराधना
 अर मन री मथण कर न धाग बढग्या गर आपरा पवित्र चरित्र

निरमळ वाणो मू दूजा न ई प्रगती रा भारग पर भाग

देवता गया व पात जागता जात हा । जात
 वासत कोई दजा उजास री जहरत नी रव । ज

नास नी व्है ती वी दूजा न काई परवास देव

रा महात्मावा री वाणी आपा न इण वासत ग्यांन

दय मकी व धार मुद र जीवण म सजम सुणी

री' हा ।

जम री अथ है—आत्मा न कावू

मरार न अकुस म राखणी, इद्रिया न

दजा पर कावू राखणी नी है, प

कावू राखणी घणी दारो वि

है—'मव सू बळवान धादमी वो इज है जिकी पोता र पड पर कावू राख सक ।' जो खुद न इज खुद रा बळजा म नी राख सब, वो धादमी कदई सुखी नी व्ही मकै । सुख रा मूळ मतर है—पोता न कावू म राखणी । भगवान महावीर धा धान मद् निजर राख न इज आपरा छेना-बगान में कहां है—

अप्या सेव दग्मेयरो अप्या हु धनु हुदम्मी ।

अप्या इतो मुत्री होई अस्ति सोए परस्पथ ॥

उत्तराध्ययन, ध० १, गा० १५

खुद री आत्मा नै, खुद रा मन न, इन्द्रियां न अर वाणी न पूरा कावू म राखणा चाहिन । खरोखर पोता पर अकुम राखणी घणी अवन्धी है । जिषी मिनख खुद पर अकुस राख सेव वो इण लोक अर परलोक दोना में सुखी रव ।

भाज सत्तार रा रगमन पर अ जितरा ई रास्ट्रवादी धम वादी, समाजवादी या पूजीवादी नेता अर मोटा धादमी निजर आय रह्या है, धारी काम दूजा न दबावणी, दूजा पर राज करणी अर आपरो सिक्की जमावण री वासित करणी है । आ बीमारी भारत म बढी जार री फयोडी है । अठ दूजा नै दबावण वासत भात भात रा हथपडा तयार किया जाव, घोमणा-पत्र निखाळ्या जाव, फौज पटा ऊमा किया जाव अर सस्त्र पाटी मभाळ्या जाव । पण इसी फोई माई री लाल तयार नी व्ही के जिषी पोता रा पड पर अकुस राख सक । समाज म, धर्म म, वेवारी जगत म अर रास्ट्र मे भात भात रा कानून-कायदा घड न जनता पर लादया जावै । इण वांनून कायदा न प्रजा रा मुख दुख सू कोई मनळव नो है ।

दरअसल मे अरे सगळा कांनून कायदा नतावा रा स्वार्थ, थोधी एज्जत अर वारी कुरसिया भी सही सलामती वास्त बणाया जाव । जिका कांनून कायदा जनता री भलाई वासत बण वां न तो जनता आपसू आप विना कह्यां, खुद री मरजी सू मान िया कर, पण जिका कांनून नेता लोग बणाया करै ता री पाळण या न खुद न प'लां करणो घाहिज, जद इज व कांनून सुरदायक बण सक । पण आज ती उलटी गमा बय री' है । जठी नै देणो उठी न ई दूजा पर दवाण अर हुकूमत करण री चक्कर जार सू चाल रह्यो है ।

दवाण अर सजम न एक बबण बाळा लोग आ बात भूव जावे के सजम तो पोता र मन सू पाळधी जावे अर दवाण जगदस्ती पाळण बगयो जाव । जे दवाण री नाम इज सजम है तो जेळ म भूमा कधियां सू लियो जावण बाळी काम ई सजम गिणीजला । एक गरीब आदमी री भूमा मरणो पाटा त्हा बपटा पै रणा भात भात री तबरीफा भेनणी सजम है तो पद्द फौज मे सनिवा न दियो जावण बाळो आडर अर नौकरा पर मालिक री अकुस सजम बयू नी गिण्यो जाव ।

सरासर आज सजम सळ री मान-तांन इतरो बघयो है के उणर वासत अरे थळ काळ अर कारण अकारण मामूली बात है । उणरो उच्चारण मुणता पाण, उणरा सनमान रा बोभा सू भारतवासिया री मन अर मस्तक दोनू भुष जाव । अण वासत आज सजम सळ पर घहोत गै'राई स उडो विचार करण री जरूरत है । घणसरा लाग घणा दिना मू बोर्ड एक बात न बचता गाय रह्या है पगत इण वासत इत उण बात न साची

नी मांसा जा रहा । आज भारत वासियों की जीवन में संक्रम की वृद्धि नाम गयी है । जे अरबसात में संक्रम दृष्टी की गार तीया की जावन सुगी, गिम्बरण, मंनती होवती धर घात में मीजं मारती । एण आज भारत रा लाग वितामिती मन्करी रा विलक्षण में पद र वितामिती की गदो मन्करी में भन्क रह्या है । इन्डियां रा दाग धण । दुस दण रह्या है । भाग विन्नाए रा अन्कर में पद म घातम तीं न गुमाय रह्या है । परिग्रह घात की वंन गती में एम न एक दूजा साग एउ वण्ट कर रह्या है धर अन्करधण र विनागकाश मारण पर मरपट दौड लगाय राया है । बाई इणकी नाम एव गवण है ? भाता इपरी कर न बाट घम या मन्कय मन्कम वितामिती घात ती या बाट दूजी है । वाग्ण व जट इन्डिया पर अन्कर पर छेवा, स्वारम-र्याग धर अन्करा तण नी र लछा तव घो बारली वितामिती तण धर संक्रम विजुल है । अन्कर भोवा-इन्करी है । माक-मन्क उन्कम निम्क घातम-मी-न है धर उण र कारण तन् न वनी मीं ती घातम प्रथवना है ।

इण भारत विजुल राष्ट्र देग जाण घम या समाज म मन्कम है, पो राष्ट्र देग जाण घम या समाज वदद दुगी ती दूई मक, उणरी पतन ना दूई मक । रोम की इतिहास विगणी वना विवण एक वगा निम्क्यो है— रोम की उन्करी संक्रम मू, माग्गी मू धर वमन्करवी मू हुयी धर उणरी पतन हुयी विनामिता मू, अन्करम मू धर विजुलमन्करी मू ।

म १९३७ में वदद-वया सन्घाट प्रमन्क घागरा एक भासण में वनी ही— मन्कम में तावन है, या तावन इव

आणद री जड है । जिकी सजमहीण है वी बळहीण ई व्हैला अर बळहीणी आदमी आणद री अनुभव ती काई उणरी कल्पना ई नी कर सक ।'

आज सगळा ससार मं भय, निरासी अर आतक रा वादळ घायोडा है । एव रास्ट दूजा पर व'म कर रह्यो है । इण सब री कारण असजम इज है । ज सगळा रास्ट्रां म सजम री पवित्र गंगा खळ सळ करती बवण लाग ती रास्टा री कामा-पलट इज व्है जाव । सगळा रास्ट्र बळवान अर सिमरथ व्है जाव ।

आज ती भारतवासी घम अर सप्रदाय भी आपरी बाणी में सजम नी राख रह्या है । एक सप्रदाय दूजा सप्रदाय पर भूटा आरोप, निंदा अर वाक प्रहार करवा मे इज लाग्याडी है । श्री असजम सप्रदायां रा अनुयायियां न पण साती सू नी रचण देवें । श्री इज कारण है के आज सूं २५०० वरस प ला आयवित रा महा मातव भगवान महावीर साधवां न सबाधता कहाी हो—

'एत्य संजए पाय सजए, वाय सजए

हाथा न सजम म राखी । नै

सजम मे रासी अर

महात्मा बुद्ध

हस्त

हाथ सू सजमो वणो

रासी ।

जिकण आदमी ।

भावता ही धारणा सुपादा की दृग्गती भाग में तरंगती की
 नाव सुसुप्तित र्थ जो की गौरव लक्षण में धारणावती की धार
 गरीर कोमल कीटा में दृग्गता में लक्षणा की की गदकी को
 है । वो र्दिका को दास है, सुपादा है ।

घोडा को मानिक र्दिक बाग घट पादा की गा की गर्दम
 बाज । लोमी बादा न लखाई, रिखाई भीमादे धर उगरी गाए
 पन नाउ । पन र्दिक दूरी कीई काम की करे । कारण के की
 घोडा की मानिक है दाग तो है । की घोडा पर धमनागी
 करे । बागड रा रिपो-मुनिदा इदिका म घोडा की घोदना
 कीवी है—

धर्मवारा इवनाह (धर्मनिपार)

त्रिकी घातम इदिका की मन्वह ह वा गर्दम है घट रिखा
 इदिका की म्नामा है वा र्दिक है । गृह घातरी पुद्गुला के घात
 बाई दगागी बाकी ? गर्दम क र्दिक ? र्दिक मन्वह बातर इदिका
 पर मन्वह रागगी पहेला, बावू रागगी पहेला, बागगापी की
 जीवना पहेला । दग मन्वह घा मा र्दिक मन्वह—

दैन कर मुनिदा से मानिक त्रिकामी रिदर कदा ।

त्रिकवारा घट त्रिकी तो बहु लबाको रिदर कदा ॥

घ बाग लो गर्दमा रा है र्दिका ग की । र्दिका ग कोम
 तो ध है—'सत्रमर्माप धारिग सत्रम पाटवा मे पोरा की गादल
 सगादमी, घा इज आयन की सपटवा है । 'सयमा लामु ओप
 मम्' दरदता में सत्रम इज जीवना है—मन्वहमीगी जीवना,
 बागम की है पन एक तरे की सुपत मीत है ।

सहार में

कीवी घट दूजा मगला घाली पुनी

जीव । पण दाता र जावण में जे कोई तफावत (फरक) नी
 व्हे, दाता री जीवण एक इज ठग री व्हे वारो एक इज अण
 व्हे तो पछ मिनख अर दूजा पाणिया मे फरक काई रव ?
 जे मानखा री लक्ष फगत सावणी पीवणी, पग्णी कमावणी
 अर मौज सोव न ऐस आराम इज वग्णी व्हे नी पछ जिनावर
 अर मिनख जीवण मे फरक काई रह्यो ? पण जिखण मिनख
 रा हिग्दा म जीवण री लक्ष फगत सावणी पीवणी इज री
 व्हे, पण खुट सजम सू जीवणी अर दूजा न आणद सू र्वण
 दवणी व्हे वो खाव, पीव अर पर ओठ ती जरूर पण फगत
 जिदगी कायम राखण न इज । इण चीजा न वापरवा मं
 जितरी साम व्हे सब, उत्तरी जरूर राव ।

२. जिको मिख साम न पूगे तर पाळ सब, वो भल ई
 कठ ई जावो, वो दुखी नी व्हे सब भार रूप री व्हे सब, कोई
 न घटक नी सन, उणरो जिदगी पून जिती फारी अर पुगवू-
 दार वण जाव । दरअमल म सजम इज मानखा री कसीटी
 हे । जिण म जितरी वधार सजम व्हे उण म उत्तरी इज
 वधारें मिनलपणी व्हे । केईक लाग वाग्नी चीजा पर ती
 पर भी सजम राग लेव ज्यू व खुजी सुग्गी खायल, कम
 खायल कपटा मीघा मादो अर कम प'रन, कमनी राग्चा सू
 काम चलाय लव । पण पोता री अदरणा विरनिया ज्यू के
 प्राथ, आवेस, अर कमाया पर सजम नी राग सब । इण
 वासत नगर्तान महावीर जिस मोट साधक पोता रें अनुभवा
 री निचाह दुनिया रें नामन राखता कथ्यो के—एक रण
 ॥ जोघी रण में लागी रा भाषा काट राव ससार री

राज-पाट पर कब्ज़ी कर सर, पण पोता रा इद्रिया पर कणो करणो अर पोता र मन न जीवणो धणो कठण है । इणा न जीवण वाळो सजमो एज साचो जोषो है, एण उको सूरवार है । एक गडत बह्यो है क जो पाच इद्रियां अर च्यार कसाया न जात ल वो इज साचो मिनथ है ।

आज दुनियां रा घननगरा लोणा री निजर बहिरमुखी व्हैगी है । जे रात'र दिन अमुक अमुक चाजा न भोगवा री इज विचार किया कर । वारी मन रूपी डालर हाडो अमुक अमुक चीजा रै सजाग विजोग साथ इज टोवती ग्व । इसा लाग पात दुखी व्ह अर पाता रा कुटुम समाज जात अर दस न पण दुख रा व्हाळा में दुगोष दवे । वारी निजर बहिरमुखी हावण मू व ससार रा हरक वेवार न, रीन भांत ३ अर सामाजिक प्रथा न इण निजर सू इज देव । वारी निजर अतरमुखी हुषा विना वा म साचो सजम नी आय सव । जिणरी निजर अतरमुखा वण जाव वो आदमी कोई अमुक गमुदाय जात के समाज न वारली निजर सू ती देत'र आत्मा री अदरुणो निजर मू देख । उणर साग भताई बहिरमुखी वग जाव अर उणसू राग द्वस रूपी कसाय भावनावा री जनम व्है । इण भावनावा र जनम सू इज असजम वध । असजम वध्या पद्य आत्मा आपग असलां सटप म नी रैवे । वा पुण्गलानदी वण जाव अर वासनावा म रमण लाग जात ।

भास्त रा सगळा धम साम्नां म आ वात मली भांत समभायोडी है क न ती मन मराब है अर न पाचू इद्रियां खराब है । मराब थीज जे कोई है, वा है वारी दुखपयाग अर

जीव । पण दोता र जावण म जे बाई तपायत (परम) नी
 व्हे, दाना री जातण एक एक टग री व्हे, धारो एक इज लक्ष
 व्हे तो पद्य मिन्ता धर इजा प्राणिमां म फरक काई रव ?
 जे मानसा री लक्ष पगत रावणो पीवणो, परणी वमावणो
 धर मौज सीग न एक धारांम नज करणो व्हे तो पद्य जिनावर
 धर मिन्ता जीवण म फरक बाई रव्ही ? पण जिकण मिन्ता
 रा हिरदा म जीवण री लक्ष पगत वावणो पीवणो इज नी
 व्हे, पण रुद सजम मू जीवणो धर इजा न भाणद सू रवण
 दवणो व्हे वी खाव, पीर धर पर मोड तो जरूर, पण पगत
 जिदगी कायम रावण न इज । इण चीजा न वापरवा मे
 जितरो सजम व्हे सक, उत्तरो जरूर राव ।

। जिकी मिन्ता सजम न पूरी तर पाळ सक, वो भले री
 कठ ई जावो, वो दुखी नी नै सक, भार रूप नी व्हे सक कोई
 न लटक नी सक, उणरो जिन्ता फूत जिती फारा धर मुनवू
 दार बण जाव । दरअसल म सजम इज मानसा री कसौटी
 है । जिण में जितरो यधार सजम है उण म उत्तरो इज
 वधार मिन्तावणो व्हे । कइर लोग धारनी चाजा पर ती
 फेर भी सजम राव लेव ज्यू क लूवी सूखी खायले, कम
 खायल, कपडा सीधा सादा धर कम परत कमती गरचा सू
 काम चलाय लेव । पण पोता री अरुणी विरनिया ज्यू क
 मोध, आवेस, धर वसाया पर सजम ना राव सक । इण
 वास्तु भगवान महावीर जिस भाट साधक पोता र अनुभवां
 री निचोड दुनिया र मानन रावता व्हो वे—एक रण
 जाको जोषी रण में लाग्या न माथा वाट मव, मसार री

जो ये सक्कर रा परतल दरसन करणा चावो तो प'ला काछवा र ज्यू पोता री इद्रिया पर काबू राखो । जठा ताई काछवा घर्म धारण नी करौला, सक्कर (मुख) रा दरसन नो व्हैला ।

इण तर सजम जीवन रं वासन जखरी नी पण घणो जखरी है । बिना सजम र पापां री बबतो भरणी बढ नी रय सक । छात म सू पाणी चूवतो व्है तो आपा उषन तोड उ नी नाखा, नवी छात तयार नी करावा पण जूनी छात री मरम्मत करावा । ठीक मरम्मत करायां सू चूवतो पाणी नद व्है जाया करे । आत्मारूपी छात है घर उणम इद्रिया रूपी फाडा है । उण फाडां में सू प्रभाव रूपी पाणी चूव । इण पाणी ने सजम रूपी सीमेट सू घटकावणी है, कारण के घटकार्या त्रिना घुटकारो इज नो है ।

भगवान महावार न वारा पाटवी चेला गोतम रांगधर पूछ्यो—'सजमण नतो जीवे कि जणयई ?' (भगवन, सजम पाळ्या सू जीव न काई मिले ?) भगवान महावीर बोल्या—

‘अणह्वयत्त जणयई’

निरोगपणा सू लाबी उमर भोगणी व्है तो सजम रसायण र समान है । सजम एक इसी सुद्ध रस है जो आत्मा, मन घर सरोर न नारोग अर मस्त वणा न्व । सजम भेयी र लाहू रै ज्यू है, जिण में कडवापण तो है पण आत्मा री वळ बढावण री ताकत ह । इण वासत एक कवि कह्यो ह—‘मयम विनु घडी-यन इक्कु जाळ’ सजम बिना एक घडी ई नी जीवणी चाहिजे । भारत री सत्प्रती मं धनपतिद्यां के राजा महाराजावां गी पूजा

आधी चीज जे कोई है वा है वारी गदुपयोग । कोई ग्याती जे इण इद्रिया अर मन न खोट रास्त नी जावण देव अर राग-द्वेस में नो हूवण देवे वो साचो सजमो है । गोता में भगवान भिसण धरजुन न कहाँ है—

इन्द्रियस्मिन्द्रियस्वार्थे रागद्वेषो व्यवस्थितो ।

तपोन वगमागध्ने लोह्य स्व परिपचिनी ॥

हरेक इद्री र साग राग द्वेस रूपी काटो लाग्योडी है । हुसियार साधक वो इज है जिकी उण राग द्वेस र वसीभूत नी व्हे, कारण के इद्रिया दुस्मण नो है, दुस्मण तो राग द्वेस है ।

आ इज वात भगवान महावीर पावापुरी मे आपरा छेला-वस्त्राण में—उत्तराध्ययन सूत्र रा ३४ वा अध्ययन र रूप मे कही है के राग अर द्वेस दोनू दुसमण है । इणा सू जे कोई भादमी आपरी इद्रिया आधी रास तो वो मिनस इण ससार माय न कमळ-पत्र र ज्यू निरलप रय सव ।

सास्त्रां मे कच्चा साधकां न चेतावणी पण दियोडी है । वान काछवा री रूप देय न सावचेत किया है । भगवान महावीर 'सूत्र वृताङ्ग सूत्र' में साधका नी धी सदेस दियो है—

जहा कुम्भोत घंवाई तए बेहे समाहरे ।

एष पावाद्र मेहावी, अजभत्पेण समाहरे ॥

णिण भांत काछवी डर लागण सू पाता रा अगा न माय नै समेट लव, उणीज भात मिनस नै आपरी इद्रिया वासनावा में सू समेट लवणी चाहिज ।

आप सकर रा मदिर में जावती बग्वत धारला वानी काछवा री मूरत देखी व्हेला । इण मूरत री अथ श्री है के

ने बंद कर लिये जाय ।' धांसालू न वेगम की यात्रा जचगो । दुरगादास पकड़ीज्यो । उणर हाथा भर पना मं सोलण री शंखळी पडगा ।

। उण वीर री मरीर सोट री जत्रोरी मं जवडपाठी हो, पण उणरी आत्मा आजादी रं वासन तडप री ही । यो सोन रह्यो हो ने भारत न सुवनर कीकर बणायो जा सन । धाज आपर जीवन मं जोस ना है, पून ग गरमी नी है, वनी री मासा मं बडू ती—

वह छून बहो जित मतसब का जिसमें उबाल का नाम नहीं,
वह छून बहो जित मतसब का या सब बेग के नाम नहीं
वह छून बहो जित मतसब का जिसमें जीवन की आत्मी है,
ओ परबत होकर बहता है वह छून नहीं है पानी है ।

जवांता ऊठो, घोर ऊठपां मूं समाज ऊठसो ।

रात रा दुरगादास दस रा आजादी री सांतिण तयार कर रह्यो हो । रात रा बार बज चुकवा हा । च्यारुमेर घोर अघारो भर सरणाटो छापोड़ी हो । समळी सगार जिद्रा दयो र सोळा मं विर्मांती ले रह्यो हो । उणीज बरात दरवाजो मुमण री आवाज आई । दुरगादास देख्यो ने एक पून जिगी कामठ नव-जवान धीरे धीरे आग बडतो आय गह्यो है । उणर एक हाथ मं दीवी हो भर दूजा हाथ मं तलवार । उणर एार एक सोळ सिणगार बरियाडी गरी हो । 'अरे ! आ गृण ? गुलेनार !' साच्यो—'आघो रात र यत्तग वेगम अठ मपू आई ? उणरो अठ वाइ काम है ?' वो सोष इज रह्यो हो ने वेगम अकडर बोली—'दुरगादास, थू जांण, म्ह मृण हू ?'

कदर्ई नी हुई ह, अठ ती जिणरा जीवण म सजम अर सदा-
चार री जोत जगमगावती दीसी उणन इज पूजनीक गिणियो
है । उणरा कुळ, जात, देस क वन वाना कदर्ई ध्यान नी दियो
गयो है ।

राजस्थान रा इतिहास में एक उबळ त दिश्टात है । मुग-
लिया सल्तनत रा बादसाह औरगजेब भारत रा सगळ्या सिमाडों
पर आपरो कब्जो कायम कर लियो हौ पण राजस्थान रा धोर
चुप नी बठ्या हा । उणा बादसाह री नाक म दम कर राख्यो
हो । बादसाह औरगजेब री बेगम गुलेनार बडी आजाद तबि-
यत री औरत ही । मोटा घराणा मे मिनखा री इच्छाया ई
मोटी व्हे । व दिन-दूणी अर रात चीगणी बधती जाव । पसो
अर वासना मिनख न बरबाद कर नाख । भारत म सोना री
दो नगरिया जगत मे चावी ही—एक लका अर दूजो द्वारका ।
पण दोन्यो री नतीजो काई निबळघो वी आपर सामन है ।
दो-या री विणास वासना अर असजम सू हुयो । लका अर
द्वारका नगरिया, जिकी एक दिन वैभव री चोटी पर चढ़घोडी
ही, वासना र कारण एक दिन धोर अधारा में हूवगी ।
असजम र कारण दो-या री धोर पतन व्हेग्यो ।

हा, तो गुलेनार जुद्ध रा मदान म रणबवा राठीड दुरगा-
दास री बीरता देख'र उण पर किदा व्हेगी । सोच्यो— इण
धोर ' कीकर पाय सकू ?' उणे मन म जुगती सोच'र बाद
साह न कस्यो—

'दुरगादास बडो सतरनाक है, इणन जीवती इज पकड

न कद क्यू नी कर लियो जाव ।' बादसाह न वेगम री घात जचगी । दुरगादास पकडीजग्यो । उणरै हाथा अर पगा में सोखण री सांखटा पडगी ।

उण वीर री सरीर लोह री जजीरा म जकडघोटी हो, पण उणरी आत्मा आजादी र वासत तडफ री' ही । वी सोच रह्यो हौ के भारत न सुततर कीकर बणायो जा सक । आज आपर जीवण म जोस नी है, खून में गरमी नी है, कवी री भासा मे वहु ती—

वह खून कहो किस मतलब का जिसमें उवाल का नाम नहीं,
 वह खून कहो किस मतलब का या एक देश के काम नहीं
 वह खून कहो किस मतलब का जिसमें जीवन की लानी है
 जो परबण होकर बहता है, वह खून नहीं है पानी है ।

जवाना ठठो, धार ठठघा सू समाज ठठसो ।

रात रा दुरगादास देस री आजादी री तातण तयार कर रह्यो हौ । रात रा बार बज चुकया हा । च्यारु मेर घोर अघारो अर सरणाटी छायोडो हौ । सगळी सगार निद्रा देवी र खोळा में विसामी ले रह्यो हौ । उणीज वसत दरवाजी खुलण री आवाज आई । दुरगादास देख्यो क एक फूल जिसी कामळ नव-जवान धीर धीर आग बढती आय रह्यो है । उणर एक हाथ में दीवो हौ अर दूजा हाथ में तनवार । उणर लार एक सोळ सिणगार करियोडी नारी ही । अरे ! आ कुण ? गुलेनार !' सोच्यो—'आघो रात रे वसत वेगम अठ क्यू आई ? इणरो अठ नाई काम है ?' वी सोच इन रह्यो हौ के वेगम अकड'र बोली—'दरगादास, थ जाण, म्हा कण ह ?'

‘हां हा, जाणू वयू ती, थू मुगलिया सरतनत रा बादसाह रो वेगम है । बादसाह धारा इतारा पर राच्या कर ।

‘ठीक, दुरगादास, जर तो थू म्हन श्रीळग है पण दुरगादास, धार सांमन म्हारी एव मागणी है । आज म्हू एव मोटी उम्मीद लयन आई हू एक वडी भावना लेय'र आई हू । उम्मीद है थू नटना नो । थू म्हारी बात माननी तौ मालामाल व्है जावला, भारत रो ताज धारा माथा पर हीला अर नी नी आ तलवार धारा दो टुकडा पर नांखला ।’

मिनरूप मोन सू डर, घबरीज, भयभीत व्है पण जिका हिम्मत बाळा व्है व मोत रो आंधी आगे बिलकुल नो डिग । व हिमाळा र ज्यू अटळ रेव । दुरगादास पण मोत रो भयकर जवाळा सू बिल्कुल नी घबरायो । उणे कह्यो— वेगम साहिबा, श्री दुरगादास धारी मांगणी सुण्यां र पछ इज कोई जवान देय सक ।’ वेगम हसी रा फुधारा छोडतो बोली—‘म्हारी एक छोटी सो'क मांगणी आ है के थू म्हन पत्नी रुप म स्वीकार करल । बादसाह रो कोई चिंता करण रो जरूरत नो । बी ती आज इज मोत र घाट उतार दियो जामी । श्री म्हार डावा हाथ रो खेल है ।’ बीर दुरगादास थोडी देर र घासतें दुविधा में पडग्यो । बी विचार करण लाग्यो— नीती काई कव है ? म्हारी घम काई कव है ? काई मोत रा भय सू गुलेनार रो बात मान लू ?’ मायने सू पटाचो पडियो—‘नी, बदई नी, जिकी घम न छोड द, घम ई उण न छोड द ।’

जो बड़ राख घम को, ताहि रखे करतार ।

जे इबाये घम को, वह डूबे कालीघार ॥

वेगम ती म्हारी माता र समान है । नीती साम्तर म कह्यो ह—

राजपत्नी गुरुपत्नी, मित्र पत्नी तयव च ।

पत्नी माता, स्व माता च पञ्चते मातर स्मृता ॥

धे पाच मातावा बताई गई ह । उणमें राजा री राणी पण माता है । दुरगादास री बेट्या भणभणाय ऊठी । उणे गभीर गरजना कर न कह्यो—‘आ थू काई काँवै है गुलेनार ? भारत री श्री लाल पराई नार नै जगदवा र समान माता र पूजनीकरूप र्भ मान । इण वासतै थारी आ मागणी स्वीकार नी कर सकू ।’

‘काई कह्यो ? म्हारी आ मागणी घन स्वीकार नी है ? अवार तेव लू । कामवबस देख काई है ? इण काफर री माथी तरवार सू उडाय दे । इण म्हारी मागणी न ठोकर मारी है, म्हू इणर माथा र ठोकर मारू ला ।’ पळ्ळाक करती तरवार म्यान र वार निरुळी । इतरा म एक अवाज आई ठैरजा कामवबस । खबरदार, जो तरवार आग बढाई तो ।’ श्री कुण सेनापती ? उण ऋषट’र तरवार आधी फक दी । तलवार रा दो टुकडा छेग्या । उणे कह्यो—‘दुरगा दास ! थू परिस्ती है, थू देवता है थारै म साची मिनसपणी है, सजम री जात है ।’

वेगम चमकी अर बोली—‘सेनापती, थू अठ कीकर ?’

सेनापती कह्यो—‘इण पैगबर न माथी नमावण नै ।’

गुलेनार कह्यो—‘इतरी वे अदधी ? इतरी वे-समीजा ? जबा सभाळ’र घातज । थू किणर साग घात कर रह्यो है ?’

सेनापती बोल्या—‘हा, एक रुळियार राड र साग । थू काई बोल री’ ही ? धने सरम नो आवै ?’ उणे साकळा तोड न व्ह्यो—‘जाओ भारत रा देवता जाओ, इद्रिया रा स्वामी जाओ !’

भोग खातर दुरगादास री अनासवती दख नै एक वधि र सुरा रा तार भणभणाय ऊठ्या—

जननी सुत ऐसो जने जसो दुरगादास ।

बांधी मुडासा रासियो विन बांभ घाकास ॥

सजम जीवण न महान वणाव । जीवण री व्यात्या करता आचारज व्ह्यो है वे जिको विकारा रै सागे लडे, सिध रै ज्यू गरजती थवो अमाय, अत्याचार अर अस्टाचार सू जुध कर, उणरी जीवण इज साचो जीवण है । जीवण री अरण ह—वासनावा सू जूझणो । एक पलक इज जीवो, पण उजास करता दीपक रै ज्यू परकास कर न जीवो । अध वळ्या छाणा (थेपडी) र ज्यू विकार री धवो छोडता थका सो वरसा तक जीवता रैवो तो ई उणरी कोई कीमत नी है । रयनेमी री वासना भरी जिदगी गुजारवा री अरदास पर पदुत्तर देवता महासती राजमती व्ह्यो ही—‘सेय ते मरण भवे’ असजमी जीवण मौत जिसो ह, वास हीणा फूल जिसो ह, तल हीणा तिला जिसो है, जीव-हीणा सरीर जिसो ह, पतवार हीणी नाव जिसो ह ।

सजम जीवण रो आतरिक फूटरापो ह, उणर विना

धारलो वणावटी फूटरापी फिन्नूत ह । बागद रा पूल पूटरा
 मने ई दीसी पण मुगधी नी देय सक । आज री मितन
 अदरणी पूटरापा न नून'र धारना थोधा फटरापा न लार
 पागन बण्योनी ह । इसू आ बवत पूरी उतरी के— मजब
 तरी वृद्धत अजब तरा खेत, छलू दर न खिर मं धमेती का
 तल ।' महाकवी रविन्द्रनाथ आपरा सौंदर्य-बोध नाम रा एक
 लख में बिस्यो ह— फूटरापा न पूरण रू मू भोगण धामन
 सजम री अरुत है । जो फूटरापा री भगत है वो गजम
 अर नियम री पण भगत है । उणर जीवन रा कण-कण मं
 सजम री जोन जगमगावती रव । जे आप साचागा फूटरापा
 री उमाग करणी चावो तो आपन आपरी भोग लालमायां पर
 कानू राखणी पडसी । मजम अर नियम मू रवणी पटो ।
 भारतीय गङ्गी री साधो आकरण धो इज है । वो आपा
 न सत्य अर सु'र र भाग्यत सिद्ध बानी ले जाय । वापसी
 जगत काना खांच अर उठ गयां पत्र मितन आपरी अतरद्वद
 भूल जाव अर सानी री अदोली आणद अनुभव करवा नाग ।

सजम र मिटाग री रम वागणी व्हे तो आप आज सू
 इज तयार न्ह जायो । आ चीज पगत बरणा मू या सुणण
 सू नी मिठला । इणने पावण वासा जीवन में आरण
 करणे पडसी । ज्यू ज्यू आप जीवन मं सजम री आरण
 कराना लू लू आपा उणर मिटास री पती लागना ।
 'प्रत्यक्ष कि प्रमाणम' र मापक आ परतन अतमाइत करवा
 री चाज है । पद्य तो आपरी जवान आपोआप धोणण लाग
 जावला ।

गुलेनार व्ह्यो—'इतरी वें अदबी ? इतरी वें-समीजी ? जवान सभाळ'र धोलजै । थू विणर साग वात कर र्ह्यो है ?'

सेनापती बोल्ह्यो—'हा, एक रुळियार रांड र साग । थू काई धोल री' ही ? धनै सरम नो आव ?' उणे सावळा तोड न व्ह्यो—'जाओ भारत रा दवता जाओ, इद्रिया रा स्वामी जाओ ।'

भोग खातर दुरगादास री अनासवती देख नै एक कवि र सुरा रा तार भणभणाय उठ्या—

जननी मुत ऐसी जने जसो दुरगादास ।

बांधी मुबासो रालियो बिन भाभ प्राजास ॥

सजम जीवण न महान वणाय । जीवण री ध्यास्या करता आचारज व्ह्यो है व जिकी विकारा र साग तड, मिध र ज्यू गरजती थकी अयाय, अत्याचार अर अस्ताचार सू जुध कर, उणरी जीवण इज साची जीवण है । जीवण री अरय ह—वासनावा सू जूळणी । एक पलक इज जीवो, पण उजास करता दीपक र ज्यू परकास कर नै जीवो । अघ वळघा छाणा (धेपडी) र ज्यू विकार री धू धी छोडता थका सो बरसा तक जीवता रैवो तो ई उणरी कोइ कीमत नी है । रथनेमो री वासना भरी जिदगी गुजारवा री अरदास पर पडुत्तर देवता महासती राजमती व्ह्यो ही—'सय ते मरण भवे' असजमी जीवण मोत जिसो ह वास हीणा फूल जिसो ह, तल हाणा तिला जिसो ह, जीव हीणा सरीर जिसो ह पतवार हीणी नाव जिसो ह ।

सजम जीवण री आतरिक फूटरापो ह, उणर बिना

वारसो बणावटी फूटरापो फिजूल ह । वागद रा पून फूटरा
 मल ई दाखी पण मुगधी नी देय सक । आज री मिनः
 अदन्गी फूटरापा न भूल'र वारला थोधा फूटरापा र सा
 पागल बण्योनी ह । इणसू आ ववत पूरी उतरो के—'अज
 तरा कुदरत अजव तेरा येन, छटूदर के सिर में चमेना क
 तन ।' मडाकवी रवि द्रनाथ आपरा मोंदय बाध नाम रा एव
 लघ में लिख्यो ह— फूटरापा न पूरण रूप मू भावण वासत
 सजम री जळ्गत है । जो फूटरापा री भगत है वो सजम
 अर नियम री पण भगत है । उणर जीवण रा वण्णण में
 सजम री जोन जगमगावती रव । जे आप साचणी फूटरापा
 री उपभोग करणी चावो तो आपन आपरी भोग नागमापर
 वावू राखणी पडसी । सजम अर नियम सू खसो पण्णी ।
 भारतीय सस्कृती री माची आकरसण ओ इज है । वी आपां
 न सत्य अर सुदर र भाग्यत सिद्धत्व कानो के ज्ञा । कागमी
 जगत वाना खाच अर उठ गया पछ मिनः आपरी अतुरदद
 मूल जाव अर सांती री अबोली आणद अनुभव हाव लाग ।

सजम र मिठाम री रस चाखणी छै नै पण आज सू
 इज तयार व्ह जाओ । आ चात्र फगत दणमू का सुणण
 सू नी मिळ ला । इणने पावण वासत इणन में आचरण
 करणे पळ्मी । ज्यू ज्यू आप जीवण म संक री आचरण
 कराला त्यू त्यू आपने उणर मिठाम ही री लागला ।
 'प्रत्येक रि प्रमाणम र माफक आ पण्णवमाहम करवा
 री चीज है । पछ तो आपरी जयान भोग बालण लाग

विवेक री प्रकास

मानसता र जीवन रा तार आज सू नी पण जुग जुग सू उलझयोडा है । वान सुलभावन खातर आर्मावत रा महा मानव महावीर आपान एक मारग बतायो है । उणा कह्यो ह—साधक ! थारो मारग विवेक रा उजास सू जगमगावती रवणी चाहिजे, थू ससार री अधारी गळिया मे रगडता वखत विवेक री टोच हाथ मे राख्या कर । उणरा मगळीक उजास में थू देख सकला ये कठे विसय वासनाया रा खाडा ह अर कठे लोभ अ क्रोध रा डरावणा भाखर ह कठ मोह माया री चीकल ह अर कठ घमड रूपी काळी नाग पूपाडा कर रह्यो ह ? जठा तव धारें मन में विवेक री जोत जगमगावती रवला उठा तव थू विसय वासनावां र खाडा में नी पड सकला, लोभ अर क्रोध र भाखरां सू नी टकरावला । जे उठणो वठणो, खावणो, पीवणो, सूवणो जागणो अे सगळा काम विवेक रा उजास में व्हता रवे ती पाप कम रा बधण थन बांध ती सक । जे विवेक री दीवी राज व्हग्यो तो पाप थन दबाय देवला ।

आचारज कूद कूद एक जग ब्रह्मी है के द्रव्य त्याग द्रव्य पूजा द्रव्य भाटा, द्रव्य जप-तप वगर साधनावा विवेक बिना कोई काम री नो है । व बिना विवेक री होवण मू साधक रा आत्मा न संसार में भान भांत रा जूणा भुगनणी पड । इण साधनावा मू आध्यात्मिक जीवण री विकास नो छै ।

जन घम विवेक प्रधान धर्म है । इणमें घम रा व्याख्या करवा बाळा हरेक साधना नं, चाबै वा छोटो छ्ही अथवा मोटी, विवेक री बसोटी पर कम न दम्नी है । जिण साधना म विवेक है, वा सम्यक् साधना है सुभ जाग बाळो साधना है । पण जिण साधना में अविवेक है, वा असम्यक् अर असुभ जोग बाळी साधना मानी जाव । सुभ जोग बाळी साधना पाप री नास कर अर असुभ जोग बाळी पाप में वधारी कर, जनम मरण रा चक्कर में फमाव । विवेक रा जितरी छ्ण-बोण, जितरी मनण चित्तण अर जितरी व्याख्या जन सास्त्रकारा कीवी है, उतरी स्यात् दूजा सास्त्रा नो कीवी है । भले ई उण विवेक री नाम जुदा-जुदा जुगा में जुदा-जुदा रह्यो छै पण अमल में वा एक इज बात है । सास्त्रकारा आपरा जुग मे इण न मत्नाचार कह्यो है । जयणा धम्मस्स जणणी' र माफक इण न घम री मा मानी है । आचाराग सूत्र में साफ कह्योडो है— 'विवेगे धम्ममाहिण्' विवेक में इज घम है । जठ विवेक है उठ घम है, अर जठ अविवेक है उठ पाप है । सास्त्रा म विवेक री जग प्रतिलेखना, जागरण, अप्रमाद वगर कई सब्द काम में आया है पण सगळो री अर्थ एक इज है । निसीध सत्र में

भास्यकार ससार रा सगळा मिनरा न जागण री आदेस नैवतां वाणी है—

जागरण नरा ! निच जागरमाणस्त वृद्धती युद्धी ।

जो सयनि णतो सहितो जो जगति सो राया सहितो ॥

ह मानव, जागती र' ! जिकी जागती रव उणरी विवेक बुद्धि वधती रव । पण जिकी आळस म सती रव उण नै ग्यान रूपी घट नी मिळ सक । ग्यान ती उण नै इज मिळगी जो जागती रसी । भगवती सूत्र मे राजकुमारी जयती भगवान महावीर न सवाल पूछणी— भगवन् ! जागती रवणी वासी क सूवणी चोती ? सूवणी आछी है या जागती रवणी ? भगवान पदुत्तर दियो—

जयती ! अर्थगदयाण जीवाण मुत्तस साटू, अर्थगदयाण जीवाण जागरिवत्तां साटू ।

जयती ! कई जीवा री जागती रवणी चोती है अर कई जीवा री सूवती रवणी चोती है । जयती पाछी पूछणी— 'भगवन् ! आप री इण दोवडी वात नै मू समभ नी मकी । आप दोवडी वात कय फरमाय रह्या हो ? भगवान महावीर कही— जयती, मू घन विवेक री भासा म वात कय रह्यो ह । हरेक सिद्धात रा दो पासा हुया कर अर दोनू पासा में सचाई व्ही । जिकी एक इज पासा र चटभाडा रव वी अविवेकी है । थू दोनू पासा न समभण रा कासिस कर । जो दूजा री भलाई र वासत सूवती रव, विसराम करे, तो उण री सूवणी इज चोती है । कारण के उणरी विसराम अर सूवणी दूजा री भलाई र वासत व्ही । पण जिकी दूजा न दुस देवण न अर मणत मू वचण न

मूव, उण री मूवणी चोग्यी नी है । इणीज भात जिक्की पराप कार वासत, सवा वासत अर ग्यान वासत जागती रव, उण री जागती रवणी ई पन्वाण है । पण जिक्की दूजा री वन वेनिया रा लाज लूण र वासत, दूजा रा छाती पर मूग दळण र वासत अर दूजा री हिंसा करण वासत जागती रव उण री जागती रवणी फिजून ई । मतळव यू के अविवेकी री सोवणी अर जागणी दोनु तराव है ।

सूवण अर जागण रै ज्यू जिदगी रा हर काम में विवेक री प्राग वधणी चाखी है अर अविवेक री खोटी है । विवकी साधक प्रति लेग करती थकी वधणा न काट अर अविवकी साधक प्रति लेखन करती थकी कम वधणा ने बाव । उत्तरा ध्यान सूत्र म कहाँ है—

पुढवी आठवकाए तेऊ वाऊ वणस्तई तस्साण ।

वडिलहणा पमतो छण्ह वि विराहयो होइ ॥

प्रति-नखना जिसा विमुद्ध धार्मिक निया सू छ काय रा जीवा री विराधना करवा घाली अविवकी पाप रा बमाणी कर । उण री साधना मे जे कदाच याही घणी विवेक आ जावै तो वो 'घृणाक्षर 'याय' र भात अमली विवक नी है ।

जिण मिनख मे विवक आव, उण र जोवण री नकमी इज बढळ जाव । उण री चात चलगत उण री रहण-महण सगळी ई बढळ जाव । इसी मिनख विवक रा प्रकास मे आपरा हर काम हर विचार अर हर वोल री परीक्षा किया रै पछ एव समाज रै सनमुख भाव । विवेक वो जादू है क वो कोई र हाथ एक बार लाग जाव तो उण री जिदगी इज बढळ

जाव । इण वासत इज भारत रा मुनिया विवक री बडी
महातम घतायो है—

एक हि चक्षुरमल सहजो विवक ।
तव्बज्जुरेव सह सवसति द्वितीयम् ॥
एतद् द्वय भवि न विद्यत यस्य सोऽयम् ।
तस्यापमार्गं घतने शत्रु कोऽपराध ?

प'ली अर पवित्र आस सहज विवक है । जे या कोई र
खन नी व्हे तो दूजी आस है विवेक वाला री सगत करणी ।
पण जे कोई र खन दोनु आस्या नी व्हे तो दरमसल म
आस्यां यको ई आधो है । इसी आदमी जे खोटी मारग पकड
तो इणमे उणरो कसूर नी है । सत अर असत री परीक्षा
करवा वाली विवक है । आछी काँइ है खराब काँइ है, खरो
काँइ है, साटो काँइ है, उपयागा काँइ है निरुपयोगी काँइ है,
कत्तव्य काँइ है अकत्तव्य काँइ है, भल काँइ है, अभाग्य काँइ
है । इण सगळा बाता री निरण विवेका मिनख तुरत इज ले
निया कर । उणरी निजर हम जिसी व्ह । हस री चूच मे
एक खासियत व्हे । ओ आपरो चूच सृ दूध अर पाणी न्यारा
न्यारा कर लेव । साधक पण विवेक री चूच सृ सत अर असत
यारा-यारा कर लेव । असत न छोड द अर सत न पयडल
पण अनिवकी री निजर तो धागता जिसी व्ह । उणर वासत
मिठाई अर भ्रस्टो दोनु एक सरीला है ।

सेलडी रा सांठा न मिनख ई खाव अर द्वार दोगर पण
खाव । पण दोनां र सावण म फरक ह । मिनख सेलडी ने
चूस न उणरो सार ल लेव अर फूतरां न पेंव दिव । पण

जिनावरा में इतरी भवकरा नी है, विवक नी है, जिणसू व
 पुतरा ई भेला इज खाव । मित्त भर जिनावर में श्री इज
 परव है । जिनावर हजारों बरस पला जिण ढग सू रवता,
 जिण चीजा न ग्यावता, उणोज ढग सू व आज ई रव भर व
 इज चीजा आज ई खाव । उणम एव रत्ती भर ई परव नी
 प्रायी । श्री इज कारण है व जिनावरां री न ती सभ्यता है,
 न सस्कता है भर न समाज है । पण मात्सी हजारा बरसा
 में आपरा रहण-सृण में भर चाल चलन में घणी फेर पार
 कियो है । उणे विवक री द्यागवीण सू केई बातन चीजा छोडदी
 है भर कई चाखी चीजा पकड लीवी हैं । सस्कती, सभ्यता
 भर समाज र रहण सहण रा ढाचा में मानव घणी फेर पार
 कियो है भर श्री सगळी फेर पार आपरा विवक र वळ पर
 कियो है । इण वामत गीग्वान वाणी रा जाणीता कवि विवक
 हीणा मिनस न जिनावर री ओपमा दीवी है ।

मिनस रा खोलिया म भर मिनस री सरत में रवता
 ववा इ जिण मिनस में मिनसपणा रा लसण नी है विवक
 री जोत नी है, वी सही रूप में मिनस नी है । इसा जीवन
 न पगत विवक इज मिनस वणाय सई ।

एसेत रा जाणीता बाजार में महापडत डयो जिनस तिर-
 काळ तावटा म, हाय में दीवी लिया फिर रह्या हा । लोगा
 वान देग'र पूछथी—'जनाव, माया पर सूरज चमक रह्यो है
 भर आप दाखी लेय न वयू फिर रह्या हो ?' महापडत हँस
 नै पडुत्तर दियो—'मिनस न खोज रह्यो हू । पडुत्तर सुण'र

सोग हेंमण लाग्या । महापडत केर बोल्या— जिणम विवेक री गोरणी ती व्हे, यी मिन्नख र रूप म जिनावर है । श्रे जो हजारों मिन्नख अठी उठी फिर रह्या है—म्हून इगा मिन्नखा री जरूरत ती है । पण जिण मिन्नख म विवेक री प्रकाश जग मगावती व्हे, म्हू ती उणत इज साचो मिन्नख मातू अर उण री तलास मं इज दिन मे दीवी तियां घूम रह्यो ह । जिण इनसान में विवेक नी न्हे यी इनसांग नी पण हीशान है । महा पडत बडी मरम री बात वही जो आज ई चिराग र ज्युं चमक रो' है ।

तीतीवारां व्ह्यो है—'विवेक दसमो निधि विवेक दगमो निधी है । धा वासत मिन्नख रात अर दिन अथाग मेणत कर, दोड भाग करे पण जिण धन र वासत यो इतरो दुखी व्हे यी असत मे पासवान है । विवेक इज गाचो धन है । जिण मिन्नख न विवेकरूपी धन मिळ जाय, उणर वासत दूती चोर्जा पिजून है । जिण वसत कोई साधक र मा म विवेक री प्रकाश फल जाव उण वसत उणरो जायण इज भोखो व्हे जावै । घर म, समाज म, देस म अर रास्ट्र म हर जग उणरी इज्जत व्हे उणरो मान धर्ये । व्ह्यो है—'विवेकी वर्य न प्रिय विवेकी मिन्नख जिण न घाखो नी लाग ? विवेकी जठ ई न्हे उठ व्हे आपर विवेक नी तसवू फलाय व्हे । हवी भवरा उणर म विवेक री सामभण लाग जाव उणने

आ मा अत्र आनात्मा री भद्र परख लेव । मू परखवा री इण तावउ न सास्वकारा विवक न्यात र नांम सू आळरी है । इनो विवेक हाथ लाग्या पद्य मगार री तुच्छ अर नासवान चीजा पर सू मिनस री मोह छूट जाव । वो आपरा कुटम, समाज अर रास्ट्र र सागं ववार जरूर राख पण मन सू निर-लप रव । जन कविया इण हालत न यू बतार्ई है—

रे रे सपरति जीवहा करे वृद्धम्ब प्रनिपाळ ।

अनर स भ्यारो रहे, ज्यू घाय निसाव बाळ ॥

समदरसी विरक वाळी जीव आपर वृद्ध री पाळण करे पण अतम नू अळगी रव । जिण भात एक घाय दूजा र टावरं नै प्रम सू खवाड, पिवाठ अर वारी पाळण पासण करे पण वा आपरा अतम में आळी तर जाण के अे टावर म्हारा ती है । मू ती पगत या न पाळवा वाळी हू ।

बेडा नगरी रा विराट मदान में विहार री मोटी मेळी ही । मळा र वासत खूब तयारी व्हे रा' ही । हजारा मिला दूर-दूर सू मळी देखण न वरमाती व्हाळा र ज्यू घाय रखा हा । गौतमी नाम री एक रे'न आपरा घेटा न लय'र फुलवाडी में फूल लेवण न गई । अणर हिरदा में आणद री छोळा ऊठ रा' ही । कूना न बेचण री श्री सानेरी मोकी घरस में फगत एक वार भाया करती । इण कारण वा आपरा घेटा नै फूलां री पगारो पर सुवाय न फल साडण लागी । इतरा में भाडी में सू एक काळी नाग निवळधी अर गीतमी रा सूतोडा टापर न काट लियो । ज'र घाळण रा सरीर मं बहोत तेजी सू

फलग्यी अर टावर मरग्यो । गीतमी आय न दस्यो ती उणरा होस उडग्या, वा पूनां री टोपली आधी नास न जोर जोर सू रोवण लागी ।

मा री ममता नै मा इज जाण । टावर मा र षाळजा री कोर व्हे । मा पात दुस्य देस ल, पण टावरा री दुख नी देस सकै । पोत फाटाडी पथारी पर सूय जाव पण षाळजा री कोर न मखमल री सूवाळी गादी पर सूवावणी चाव । पोत फाटा चीथरा प'र नै सरीर री लाज ढाक लेव, पण हिवडा री जात न चोखा कपटा प'रायणा चाव । टावरा र वामत मा रै मन में कितरी गजव री ममता व्हे । वी उणरी आमा री दीवी व्हे । पण गीतमी र आसा री दीवी आज बुभग्यो ही । उणे आपरा बुभघोडा कुळदीपक न ममता सृ छाती र चेप लियो । उणरै हिवडा पर ग'री चाट लागी जिणसू वा पागल जिती व्हेगी । वा लान उठाय न मतर वादिया खन पूगी अर बोली—'अरे मतरवादिया ! थ थारा मतरा पर गुमान राखी ही, पण थारा मतरा सू म्हारा डीवरा न ती ठोक करी ।' वेदा खन जाय न कह्यो—'अरे वदा ! म्हाग व्हाला न कोई इसी दवा दी के जिणसू इणरी मुच्छां टूट जाव ।' जोतरिया खन जाय न कह्यो—'अरे जोतरियां ! म्हारा घेटा री गिर-दसा देखी, वो बोल क्यू नी ? उणर काई व्हेग्यो हे ?' इणरै पत्र उणे देवी दवतावां न मनाया पण काई गरज नी सजी । बाळन री सरीर मडण लागी । उणम सू दुरगध फलण लागी । तांम पण गीतमी उणन गळ लगाय न गळी गळी. बजार-बजार. चावट-

चावट फिरण लागी । लोग नाराज होय न उणन ठवकी देवता
अरे वाली ! धारौ बटी मरग्यौ है । उणरी नस-नस में ज'र
फनग्यौ है । पण वा उणा री बात पर कान नी देवती अर
बबती, म्हारौ बटी कय मरला ? मरला धारो । म्हार बटा
न तो नीं घायोश है ।'

महां हृषन को सब हसते हैं, बेकारों की किस्मत पर ।

भगर रोना नहीं घाता बेचारों की किस्मत पर ॥

आ दुनिया बडी दुरगी है । अठ रोवण वाटा र साग सब
रोङ्ग लाग जाव । पण उणरी दुःख मिटावण री कोई कोसिस
नी कर । दुनिया वाला सू गीतमी दुखी ब्हेगी ही, निरास
ब्हेगी ही । इतरा म उणर काना में आवाज आई—'चपा
नगरो रा मदान म एक ग्याती आयी है सरवग्य आयी है,
सरवन्तरी आयी है, वीतराग आयी है, हमरत पावणियो
आयी है, जिनी सजीवणी वाट है । उणरी वाणी म मुडवा न
जीवता करण री जाहू है ।' गीतमी आ आवाज सुणी तो उणरी
आर्या म एक नवी उजास बसवयो । उणरी हियडो कमठ र
ज्यू तिलग्यौ । जठ महात्मा बुद्ध उत्तरघोडा हा, वा उठ जाय
पूगी । समासटा उणन आग दघता अटकाई अर बह्यौ—'ओ
सडपाडो मुडरो लेय न थू कठ जाय री' है ?' महात्मा बुद्ध री
दया जागा । उणा समासदा न बह्यौ—'आ कोई दुखी औरत
नेस, इणन रोनी मन, आग आवण दो, इणन प्रकास मिळ ला
पर इणरो जावण चमकण लाग जावला ।'

गीतमी धागै आई अर महात्मा बुद्ध रा पवित्र चरणा में
गापरा एकदसा बेटा न राख'र हाथ जोड न बोली—'ये

सारता । इणन इमरस दी । पीयूस दी । मजीवणी दी । इणमू म्हारो डाकरो साजी व्हे जावला ।' बुद्ध उणन धोरप दिमो अर व्ह्यो—'ठर माता । म्हू घन सतास मिठ जिमो काम करुना पण एा वात है, या आ वे जिण घर म कोई मोत नी हुई व्हे उठा सू एव मूठी भरघा सरसा लयने आव ।' गीतमा घणी राजी हुई । उणने आसा रो एव किरण मिळी । वा दौडी अर ह्वेल्या म गई राज म'लां म गई अर साता रा सिधासण पर बठण वाळा लोगा न व्ह्यो—'म्हू घोर दरवाज पर मोस लेवण न आई ह । काई घ म्हारें वेठा र यामते भीम दोला ?' पडुत्तर म सठ अर सामत बोल्या—'गीतमी । जे थारी वेटी ठीक व्हे ती जितरी चाहिज उत्तरो सोनी ले जाव, चादो ले जाव, जयारात ले जाव अर जिकी चाहिज वो ल जाव ।' गीतमी बोली—'म्हार सोना चांदी अर जवा रात नी चाहिज । ग्यानी म्हने व्ह्यो है वे जिण घर म कोई मिनस्य नी मरघो व्हे उठा सू एव मूठी भरघा सरसो लयने आव । म्हू थारा वटा नै ठाक कर दूला ।

आ गुणता इज विण ई आसूडा ढळकावतां व्ह्यो—'म्हारो मोस वरस रो नवजवान वेटी मरग्यो है ।' विणे ई व्ह्यो—'म्हारो जीवण घण पती मरग्यो है ।' वा सोना रा म ल छोड'र धास फूस रो ऋपडिया मे पूगी । पण उणन मूठी भरघा सरसो नी मिळघा सो नी मिळघा । कारण के इमो कोई घर नी हो जठ कोई मोत नी हुई व्हे । देवट हार खायन गीतमी पाछो आई अर मद्दात्मा बुद्ध न फेवण लागो—'भगवन् म्हू । वडी

प्रमाण है, मूढ़ नगर में घर घर फिरो जैण म्हन कठई मूठी
 भर सरसों ना म्बिघा । 'बुद्ध बो-या— गौतमी ! जद सगळा
 घरां में काई न काई रो मोत हई है तो पछ धारो घर इज
 कोकर बच सक ? या काई नवी बात नी है । जिकी जनम
 सेव उपन मरणो पड, जिकी पून खिल उणन कुमठीजणी
 पद, जिकी सुरज उग उणन आयमणी पडे । जनम धारण करन
 काई भाव क मूढ़ अमर वण जावू तो या बात अमभव है ।
 काळ तो ससार रा सगळा प्राणिया पर घूम्या कर । ससार रो
 वाई तावत्र उणन रोक नी सर्व । इण वासत थन दुखी नी
 होरणी चाहिज । यू धारो कत्तव्य निभायी है अर आग ई
 आपस कत्तव्य न सनाळ । मोह में पड न पिजूल दुखी मत
 छै । एन धारो भविश्य ऊजळी वणावणी चाहिज । धार बेटा
 रो मोत स धन सिधा लेवणी चाहिज । एक दिन थन ई मरणो
 है । इण वासत हमसा ओखी काम करणी चाहिज ।

महात्मा बुद्ध रो हीया न परसण वाळी वाणी सुण'र
 गौत्रमा रो माह में सुतोढी मन जाग्यो । उणरो अतरद्वस्टी
 उपाणी, मोह माया टूनी अर चिंता मिटणी । उणे तुरत इज
 आपर घटा रो लास उपाढी अर भसाण में जाय न दाग दे
 दिथो । उण आपरो भावी जीवण ऊजळी वणावण रो तयारी
 करती अर पाछो महात्मा बुद्ध र चरणा में पूगयो । उण 'बुद्ध
 उदण गच्छामि, सध उरण गच्छामि, धम्म धरण गच्छामि' रो
 तीन मूत्री मंत्र अमीकार बोधी अर बौद्ध सध म भिक्षुणी
 वगना मानर अरदास बोधी । महात्मा बुद्ध उणन दीक्षा दे

दी । आग जायन गीतमी बौद्ध मघ री घणो प्रचार धीधी । गीतमी न विवेक री प्रकास मिळ चुबयो ही सा उणन जगत री वासनावा बाध नी सकी ।

सो साथियो ! विवेक री इण महाजोत न प्राप्त धरी । विवेक आपने जीवण में साचो मारग बतावला । आप चावै धार्मिक क्षेत्र में व्हो, सामाजिक क्षेत्र में व्हो राजनतिक क्षेत्र म व्हो अथवा आध्यात्मिक क्षेत्र में व्हो, विवेक आपन प्रकास देवला । भगवान महावीर कह्यो है—

पन्ना समिवल्लए धम्म तत्त

आपरी सत अर असत विवेक वाळी बुद्धि सू धम तत्व री व्याख्या धरी । सास्त्रा म प्रकास देवा री ताकत है, पण सास्त्रा री अर्थ तो आपां रा बुद्धि सू इज नक्की धरणो पडला । इण वासत नीतीकारा कह्यो है—

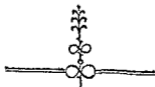
यस्य नास्ति स्वय प्रज्ञा शास्त्र तस्य करोतिक्मिम् ।

सोधनाभ्यां विहीनस्य, ध्वण कि करिष्यति ॥

जिणर खने पोता री विवेक बुद्धि नी व्है, उणन सास्त्र पण कीकर उदार सक ? जिकी आख्यां सू आधी व्है, दरपण उणर काई काम आय सक ?

तरोरतर आपा न आपाणी विवेक बुद्धि सू काम करण री अभ्यास धरणो चाहिज । आपा जद दूजा री भरोस पर रैवा, आपणी अवकल सू नी सोचा, आत्म विस्वात न खोयनां तो दूजो आदमी आपणी हालत सू अजाण होयण सू आपा न खोटी सलाह देय सक । रुढिया र चक्कर में फँसाय सक ।

इण वासतै आज दुनिया में हर जग विवेक की रात होवणौ चाहिज । विवेक की परवा किया बिना कोई भी घम साहस के विचार धारा नी तो भाग बड सकी है अर नी भागै बड सकना । इण वासत विवेक मानव जीवण सारू प'ली अर जरूरी चीज है । इणन स्वोकार पर नै इज दुनियां सुख रा दरगण कर सक । नरक न इज सुरग बणाय सक । इणन गळे लगाय न इज जिनावर मिनरत बण सक अर मिनरत देवता बण सक ।



धर्म रौ मर्म

आर्यावत, धम री मूळ धरती मानी जाय । अठे जुग जुग
सू धम रूपी गगा लोगा र हिरदा में बँवती रही है । इण
गगा वार जीवण नै मरस, समरस अर माठी बणायो मन
अर मगज न पवित्र बणायो । धम रा जोर सू इज तागा
बहिरमुखता छोडी, वासनावा रा जजाळ सू तिवळधा अर
सुद्ध चिद्रूप आत्म-सरूप बानी आग वध्या । धम जीवण रूपी
भाड री फूटरी फूल है । उणसू विचार विरती अर वरताव
ने सुधारो व्हे । उणरा फूटरावा अर सौरभ मे इज रास्ट्रीय
लोक जीवण री फूटरापी अर मिठास छिप्योडी है । धम आत्मा
री आध्यात्मिक संगीत है । उणरी मिठासभरी सुर ल'रिया
हिमाळा सू क'याबुमारी ताई इज नी अटक सू कटक तक इज
नी, पण ससार रा सगळा रास्ट्रा भ अर सगळा लडा में गूजे
है । धम आत्मा नै परमात्मा तक लेजावण घाळो भोमियो
है । उणे मानव जीवण न विकास अर प्रगती री प्रेरणा दीवी
है । धम बिना मानव समाज री कल्पना इज थोथी है । धम

इस समाज की मगज है। समाज का जीवन में धर्म की कीमत प्राण वायु जितरी है। मानव समाज की व्यवस्था और प्रगती वास्तव में धर्म आसीरवात रूप है। धर्म समाज और राष्ट्र तक की सगळी उल्लमणा नै सुठभावन की तावत राखै। तौ काई आज का जुग में इसा धर्म की जीवण में कोई जखरत नौ है ? आपण सनमुख आज ओ एक सुळगतौ सवाल है जिणरा जवाब पर आज आपा न विचार करणी है।

धर्म की पुगणी इतिहास वाच न आज का धर्मवरद वृद्धि-वादी धर्म न घुरी तर सू भात। व नपरत सू फव के जिण धर्म आपण राष्ट्र और समाज की सत्यानाम करायो, जिण धर्म भाई भाई र आपस में खून पारायो कराई जिण धर्म लाखां आदमिया न मरवाय नाख्या, जिण धर्म उण जमाना का महापुरखा न पगा नीच रगदोळ्या जिण धर्म अलेखा भाव लाया न पराधान बणाई, जिण धर्म ससार में अधसिरधा, थोपी मानतावा और छोटी रीत भात मानखा पर लादी, जिण धर्म हजारों मिनखा न सांड्या र ज्यू आपस में लडाया जिण धर्म परिग्रहवाद न धर्म रै नाम पर फूनया फळवा नीधी जिण धर्म विस्वासघान और अपाय अत्याचार सू कमायोडा धन पर पुन्न की छाप नगई, जिण धर्म छठ, प्रपच, पाखट व्यभिचार अपाय, अत्याचार और गुनामी जिसा पापा की पोसण कीधी जिण धर्म मिनग्य की मिनसपणी लूट न उणन दानव बणाय नियो जिण धर्म पडा, पोपा ठगा पुरोहिता भगडां और कठमुक्ता की व पाखणिया की मदद कीवी, जिण धर्म पगत ईस्वर की चापलूमी करण सू पाप माफी की फतवी दे

दियो । ती काई इसा धम न ससार में रवण दियो जाव ? काई इसा धम न ससार मे कोई जग दो जाव ? नी, नी । इसी धम ती वगा सू वेगी खतम धैणी चाहिज । इसा अनेका सवाल धम री जहा उलेळण मे लाग्योडा है । पण सोचणी ओ है के धम ससार मे वयू आयो ? काई धम ससार में घुरा इया बढावण न आयो है ? बात दरअसल म आ है के सागा रो नासमभी अर स्वारथिया री चालबाजी र वारण धम आज इतरौ बदनाम हुआ है । नी ती धम ती बल्याणकारी है, मगळकारी है अर जगत न साति री सदेस देवण वाळी है । जे कोई अयायी धम र नाम पर दुनिया में अत्याचार करतो व्हे ती इणम धम री काई दोस ?

एक दयाळू आदमी केई गरीब अर भोळा मिनसा न एक रतन दोनी जिणसूं व सुख री जिदगी बिताय सक । पण जे व उण रतन र कारण रतन सू इज आपस मे माथा फोडण लाग, एक दूजा री कपाळ किरिया करण लाग ती इणम उण दयाळू आदमी री काई दोस ? ठीक आ इज बात धम र वारा मे है । जे काई महापुरुख ससार री प्रजा न धमरुपी रतन दोनी ती प्रजा न उणसू फायदी उठावणी चाहिजतो, पण जा प्रजा उण धम र नाम पर आपस म धूक फजीती करण लाग, एक दूजा री माथी फोडण लाग ती इणम उण महापुरुख अर धम री काई वाक ? ओ दोस ती प्रजा री नासमभी री है । कारण के उणे धम री सदुपयोग नी कियो । धम ती मानखा न दोसती री पाठ पढायो है, पण मूरख लोग

लणसु, घर-रौ पाठ पण मजवा में कमर ना राखी । धम रा पाया पर जगत भर मुरग रौ घरपणा हुई ह, ती दूजो कांनो मूरख लोता आपर मूरखपणा रँ कारण नरक रौ घरपणा पण काबो है । प्रजा नै धम रौ लाभ उठावणो चाहिजे पण प्रजा आपरा धनजल रौ कमा रँ कारण मजज रौ दवाळी काड'र बखडो कर नाख ती इनमें धम रौ जवाबदागी कीपर व्ही स्क ? किणी चीज रौ मूरख प्रजा जे आपरी मूरखता र कारण दुग्पयोग करे तो उण चीज न इज मिटा खणी घी कठा रौ दाहापणी है ?

घणसगी बेमारिया पट रौ गढबडी सू हुमा पर घर इण रेमारिया रौ खरी कारण मिथ्या आहार विहार है । आहार सू बेमारिया है ती आहार न बन करणो चाहिज क पट न इज अतम कर दणी चाहिजे ? या इज हकीमत धम र बाबत है । धम र नाम सू बुराया बध ती काई धम री इज नाम कर दवणी चाहिज ? धर्म रा नास सू बुराइया मिट ती सख । जिण तर बेमारी सू बचण रँ ग्यातर आहार विहार में सुधार करणी चाहिज, तीज उणीज तर धम र नाम पर होबण थाला भगजा, अत्याचार, अ माय, जुलम वगर बुराइयां नै मिटावणी चाहिज । धम न मिटावण री बात विलयुन गरवाजब है ।

म्हन अठ एक दाखली याद आव । एक सै'र में एक वेपारा रवती ही । उणर सात बेटा हा । ब सानू अक्कल रा दुसमण हा । एक बगल घी वेपारी बेमार पडघी । उणर पेट में मयकर पीडा व्ही ही । बेटा विचार कियो के पिताजी र पद ~~रौ~~ पीडा रौ काई इलाज करणी चाहिजे ?

प'ली सपुत बोल्ह्यो—'रूपला नाई न युलाय न मालिन वरावणी चाहिज जिणसू पट री दरद मिट जाव ।' दूजोडो बोल्ह्यो—'अरे ! उट्टी री दया देवण सू मिनटा म पेट ठीक ध्हे जासी । पेट रा दरद वासत विरेचन अचूक दया है ।' इतर ती तीगो बोल्ह्यो—'पेट री पीडा वासत हिगास्टन रामवाण ह ।' चायो बोल्ह्यो—'भाई ! इसो वमारो में ती बोई चाग्ना वद न युलाय न पिताजी री इलाज वरावणी चाहिज । पाचमें वह्यो—'वदा री जमांनी धीतग्यो—'कोई दृसियार डाक्टर नै युलावणी चाहिज ।' इतर ती छट्टी उणरी बात काटती बोल्ह्यो—'डाक्टरां सू काई धूड व्ह ? म्हन ती उणा पर एक रत्तो भर विसवास नी ह । हामियोपथिक इलाज रोगां री जड न मिटाय सक ह । इण वासत वो इलाज म्हणी चाहिज । इण तर सू उण सवा र आपस में भोड होवण लाग्यो । थोडी देर म व गाळा राळा अर जूतम पाक पर आयग्या । सातमा वटा नै अवकल थोडी वधार ही । वो एकदम उठघी अर मायन सू तरवार लेय न आयी । उणे तरवार म्यान में सू वार वाडी अर वह्यो—'भाइयो ! इण सगळा भगडा री जड पिताजी ह । व जीवता राह्या ती फेर पेट दूखणी आवला अर घापण आपस में भगडो पण व्हला । इण वासत पिताजी नै इज सतम कर देवणा चाहिज, सो न ती वासडी रव अर न वसली वाज । पिताजी र मरण सू भगडा री जड इज मिट जावला ।'

उण नालायका आपरा वाप न मारघो या राख्यो आ ती राबर नी पण आ बात ती सो टका सही ह के सगळा अवकल रा दुस्मण हा । व बात री जड ताई नी पूग सक्या ।

ठीक इसीज हालत धानवान रा युद्धिवादिवा रो है । वारा धम र दावत इणीज भात रा विचार है । जिण धम वाप र ज्यू मानव जान रो पाठग-भोक्षण काधी, रछा कीधी, उणरो विरता विचार भर वेवार में मुधार कीधी, जिणे धापा पर घणा उपहार कीधी, उणत इज भापां भाज भापां रो मूरखता र कारण सतम कारण न तमार हुना हां । धम दावत विरोध वग्न भाज उणरा भौगुण बताय रछा हा । मवाल रो जड ताई नी पूग न पानहा न इज पकड रछा हा ।

ज कोई चोर भीत र लार छिप्याडी छै ती भीत न ना पादो जाव, वण चोर न पकडधी जायें । ठोक इणाज भात भाज धन रां भाट में कई र राबिया पणप रो' है ती उण सराबिया न दूंदर मिटावणी चाहिज । वण धम न मिटावण रा बात नी करणी चाहिज । नाक पर मारो बटी छै तो समभार आदमा नाक काट नी फक वण मारो न उडावद । इणीज भात धम पर अधम रो पाप रो, अध विसवाम रो पाखड रो भर रुदिया रो मल जमगयो है ती समभारां भा है व उण मल न साफ करणी चाहिज नी व धम न इज साफ करण रो बात सोचणी चाहिज ।

भाज समार में जितना इ धम छै वार आपम म ईन्वी है, द्वेम है धर वर है । उणरो कारण दूदघो जाव तो मानम पडसी वे वारा याग दसा धर बाठां म उण वग्न रा भवस्यावा र माफक इज धम आपरो सत्स दीनी है । जुदा जुदा धर्मा रो छेवट रो लदय देखी जाव ती उणा में कोई

करक नी है । परक जिकी है वो ऊपरता किरिया करम मे, आचरण मे पूजा पाठ रा ढग मे अर धम सास्त्रा री भासा मे है । श्री परक यारा यारा देस, काळ अर अवस्थावा रै कारण बाजब इज है । ताथकर र उपदेसा अर सदेसा म देस काळ र कारण धणी करक निजर आय । एक चौतीसी रा तीर्थंकरा री धम किरियावा अर आचरण मे बोली करक है । इणोज भांत धम री धरपणा करवा बाळा आप आप रा जुग मे देस काळ र माफक कोई बात पर धणी जार दियो है तो कोई पर कम । इणरी श्री मतळर नी समझणी चाहिज क धम जनता न आपस मे लहावणी चाव । इण वासत आपा पण मूरग्या र ज्यू जो धम रा निदा कराता ती आपणी गिणती ई उण वेपारी रा सात घेटा साग व्हेला । कारण क आपा बात री जड तथ नी पूगा । दूजा मबदा मे सरप न नी पकडा पण सरप रा दरडा पर लाठ्या पटका हा ।

जिका लोग धम न मिटावण री तास्त राख वान ससार मे फल्माडी बुराइयो न मिटावणी चाहिज । इणसू वारी दुनिया मे माग बधला । पण आ बात पगत मुणण म इज चोखी लाग, वेवार में नी उत्तर सक । कारण श्री के जिण मिन्नस र मन मे थोडी धणी ई घाली किरती व्हेला तो वो धम सू आधी नी रम सक ।

आ बात व्हे सक के धम रा कोई एक बारता रूप न मिटाय दियो जाव पण जूनी रूप मिटता इज धम कोई न कोई नवी रूप धारण कर लला । जूनी कपडो फाटता इज धम

कोई नवी कपडो प'र न आपण हिरदा म खेलण लाग जावला । उणरो घोळो बगळ जावला पण उणरो नास नी ध्हे सक । जिण जिण मुलका में धम न मिटावण री कोसिस हुई, उठ असफळता इज मिळी । चरच नै मिटाय दी तो उणरी जग लनिन री कवर ऊभी व्हेगी । सिरधा, भगती वगर ससार री अमर भावनावा है इणा न मिटाई नी जाय सक अर जठा तक अे भावनावा रवला उठा तक धम नै मिटावणी असभव है । धम न नस्ट करण री मतळव है मानसा रा हिरदा न नस्ट कर देवणी, मानखा न भावनाहीणी वणाय देवणी । भावनाहीणी मिनख बुद्धिमान व्हेता घका ई सतान व्हे जाव अर बुद्धिहीणी मिनख भावुक होवता घका ई हैवान वण जाव । मिनख न नी तो सतान वणणी है अर न हैवान, उणन ती इसान वणणी है अर इसान वणण वासत धम री घणी जरूरत है, कारण क मिनख में जो जिनावरणणी अर दानवता है, उण पर अकुस राखणी धम री इज काम है ।

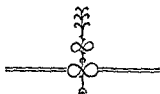
इण वासत धम री मूळ वात न समझी अर सगळा धर्मा म छिप्योडा सत न स्वीकार करी । सगळा धर्मा में एकता री बीज बोयी जाव ती धम सू कल्याण री रस्ती खुल जाव । मानसी धम सू घणी फायदी उठाय सक ।

एण वासत धम री जरूरत वावत ती दो राय व्हे इज नी सक पण उणर सदुपयोग अथवा दुरुपयोग री भार उणरा मानण वाळा पर है ।

जे आपा धम रा नाम पर लडाई भगडा भी करा अर



आप आपरा धम में अहिंसा धर सत री जथाजोग पाळण करा
 तौ धर्मा न सफलता मिल सक । उणा म मानखा री कल्याण
 करवा री ताकत बघ सक । आ बात व्हे तौ धम ससार में
 सुरग री फूटरापी धरती पर उतार सक ।



जीवण रौ इमरत

भारत री सस्कृती पोत इज एक विराट सस्कृती है । हजारों बरसा सू गंगा री निरमळ धारा र ज्यू वा मानखा र हिरण्य म बढती रही है । वा मिनखा रा दिल अर दिमाम न पवित्र बणाय री' है । मानखा री एकता न सबळ बणाय री' है । भारत री सस्कृती मिळण अर सगम री सस्कृती है, मिळाप अर सम्मेलन री सस्कृती है । जो विचारधारावा भारत में आई, वा सब न खुद में मिळाय न आपरा लक्ष कानी बराबर बढती रवणो इण सस्कृती री ध' रह्यो है । माय, सास्य, वसेसिक, वेदात, मीमासा, बौद्ध अर जन जितरा ई सास्त्र है, वार आचार विचार मे चाव जितरी ई फरक थ्यो, पण उण फरक में ई सम भाव है । अनकता मे ई एकता है । भेद में ई अभेद है । जे आपा इण सस्कृतिया अर सास्त्रां न लगन सू देखा तो आ बात दिन रा उजाळा र ज्यू साफ दीम है वे सगळा सास्त्रकारा सत न घणो मान दीनी है अर उण न जीवण रौ इमरत * ।

सत पीत इतरो बडो है के उणरो अपमान करे सभार म कोई आदमी जीवती नी रय सरै । दुनिया रा मोटा सू मोटा विचारक, सास्त्रकार, कयो, बळाकार, महात्मा, तीर्थकर अर पगवर सगळा ई सत री सेवा करन इज इतरा ऊचा पद पर जाय सकया है । सत बिना आखी दुनिया अधारा म है । दूजो सब्दा मे सत न पाया पर इज सारो ससार टिकयोडी है । दुनिया री वेपार, वेवार अर नीती नियम मत रा आधार पर इज चाल है । इण घासत पडतां सत री म'मा गावता लिख्यो है—

सत्यं वाचते पश्ये सत्येन तपते रवि ।

सत्येन वाति वापुग्ध, राय सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥

पुराणकारा री कथणी है क आ धरती संसनाग रा पण ऊपर ठरयोडी है । केई लोग दूजी कल्पना पण कर । पण बंदव्यास री कथणी है के आ धरती सत पर इज टिकयोडी है । सत रै कारण इज आभे मे सूरज चमक सत र बळ पर इज ठाडो, धीमो अर सौरभ वाली परन चाल ।

आग मं सू गरमी निकळधी जाव, पाणी में सू ठडक काळी जाव, माटी में सू निपजपणा री नास कर दियो जाव, सूरज सू उजास अळगी कर दियो जाव, तो पछ कोई उणा न आग पाणी, धरती अर सरज रै नाम सू नी पुकारला कारण के वा म जो सत हो, प्राण हो, मूळ सत्व हो, वो निकळ्यो । जिण तरै सू सरीर में सू प्राण निकळया पछ उणन कोई जीवती प्राण नी कव, उणीज तर ससार री सगळी चीजा मे सू सत निकळया पछ व आपरा असली नाम सू ती ओळखीज ।

मानखा जीवन म अर साधना रा क्षत्र म, हरक जग ज्यू के मामाजिक, आर्थिक, राशनतिक, धार्मिक सास्त्रतिक अर सदाणिक बगर कोई पण ठिकाण सत नी रहै तो इण मानव जीवन या साधना री कीमत फटी कौडी र बराबर ई नी है ।

सत एक पारसमणी है जिणरो खंडकी लागता पाण मानव जीवन असली सोनी वण न चमकण लाग जाव । जे किणी भिखारी या बगाल सत न स्वीकार कीनी तो उगारा जोर सू बी पूजनीक अर सत सिरामणी बणग्यो ।

पण मत मानखा री कसौटी पण है । बी जिणन मोटी बणावणो चाव प'लो उणरो पूरी तपाम कर इणर पछ इज बी सणन समाज मे इज्जत दिराव । हजार बरस प ला री एक पुराणी कथा है—अरहनक सत री परम भगत हो । उणरो रग रग में सत समायोडो हो । बी धन माल, कुटम परिवार, इज्जत आवरु अर प्राणा तक न सत र सनमुग मामूली गमभनी । आजकाल रा मिनखा जिसी रहैतो ती थोडीसीक आपन आया सू या धन री लोभ मिळण स सत सू डिग जाती पण बी तो धम पर कायम रवण वाळो हो । बी एकर चपा नगरी सू जहाजा में माल भर'र आपरा साथियां र साग वपार करण न परदेस जाय रह्यो हो । मारग में एक पिसाच भयकर रूप धारण करन आयो अर कवण लाग्यो— ह अरहनक, थू समझ जा, थू जा सत री पूछडो पकड राख्यो है बी सब भूठी है, दूग है, उणम कोई सार नी है । इण वासत इण नकली सब्द न छोड द ।' अरहनक र मन पर पिसाच री बात री कोई

असर ती हुओ। यो आपरा सन मू विलकुल ती डिगणी। इण सू पिताच घणी नाराज हुओ अर जहाज उलटण री डीऊ करण लाग्यो। उण बाणी—'घर धम रा टूगी, थू हाल तक ई मानजा नी ती धार माग पारा अ निरदास साथी ई मारधा जायला। थू पगत इतरो कैयदे थं म्हारी मानता भूठी है।' अरहनक रा साथी घबरीजया। थ ववण लाग्या—'भाई, यो ती आपतवाळ है, 'आपत वाळे मरियादा नास्ति।' जवान हिलावण में धार काई लाग ? धार माग थू म्हान ई थयू मरवाय रह्यो है ? पण यो ई अरहनक हो, आत्मा री अमरता री सत्तेस गिर थ प्रवचन सीख चुक्यो ही। 'नन द्दिदति-दास्त्राणि री पाठ उणर रू-रू में रमग्यो हो। यो आधी तरै सू जाण हो क आत्मा में मू मत निवळणो सरीर में सू प्राण निवळण र समान है। उण आपरा साथिया न सत री मरुत्व बतायो अर पात ई सत पर फामम रह्यो। पिताच उणरो वाळ ई बाकी नी कर रावयो, उल्टो उण मतवादी र चरणा री सेवक बण र हाथ जोड न वरदान मागण री ववण लाग्यो, पण उणन कोई वरदान री जरूरत नी ही। उणन ती पगत मत री जरूरत ही। इण तर सत री कसौटी पूरी हुई अर पिताच राजा होय न उणरो जजकार करती पाछी चालतो बण्यो।

सत पगत वो इज नो है वे जिकी वाणी ॥ १० ॥ जाव ।
 सत ती मा मू सोच्यो जा राव ।
 अर आत्मा सू आचरण जि ।
 भारत रा ॥ ह्यो ॥

‘यद् भूत हित मत्पत मेतत सत्य मत मम’

जो जीव मात्र र वामत कल्याणकारी व्हे, उण सत नै द्ज म्हू स्वाकार करू । मन री ध्याख्या करता उतराध्ययन सूत्र रा टीकाकार शाचारज साति सूरि कह्यो है—

सद्म्यो हित सत्यम्

जो प्राणिया र वासत हितकर व्हे वो इज मत है ।

अठ एक बान विचारणा जोग है । समभली एक चोर है, वो क्व के चोरी करणी म्हार वासत फायदामद है । एक दारू पीवणी क्व के दारू पीवणी म्हार वासते फायदाकारक पडला । चोरी करणी फायदाकारक है—आ बान कवण बाळो घांभी इण बात न उठा तक इज कवला के जठाताई वो पकडघो नी जाव अर उणर जून नी उड । पण जद वो पकडघो जाग अर मार पडण लागे तो स्यात वो आ बात नो कवला । एक चोर दूजा र घर चारी कर अर कोई दूजो चोर उण चोर र घर इज चोरी कर ती प लो चोर आ बात नी कवला के चोरी करणी फायदामद है । इण तरै सू आपा कय सका के चोरी करणी हितकर नो है । इणोज तर दारू पीवणी ई फायदामद हावती तो सगळी दुनिया उणर लारै पड जावती । पण बात असल में इणसू उट्टी है ।

मगळा र वासत हितकर कवन, आचरण, विचार या तत्व री नाम इज सन है ।

दुनिया म जितरा ई घम है, सास्त्र है, वाद है, पय है या सप्रदाय है सगळा ई सत न लेय न चाल । कोई पण सत नै छोड न नी चाल । जन घम ‘त सच्च खु भयक’ कयन सत न,

भगवान री आपमा दी है । वेदा मे—

सत्यमेव जयते नान्तम सा मा सत्यावित ।
परिपातु विश्यत ' (सत म्हारी रक्षा कर) ।

कह्यो है । बौद्ध धम में यम्हि सच्च च धम्मो च सो सुब्बो' (जिण में धम अर सत है, वो इज पवित्र है) कह्यो है । राष्ट्र पिता महत्मा गांधी तो सत न आपरो इस्ट देवता मान राख्यो हो । उणा तो अठा तव कह्यो हो वे जे देस मे एक ई आदमी पूरो सतवादी व्हे तो भारत गाज इज स्वतंत्र व्हे जाव । इमो वारो पक्की विसवास हो ।

भोस्म पितामह आपर प्रण पर कायम रवता थका आपरा वचन न सत सू निभायो । ओ सत री सुळगती दाखली है ।

एक नावडियो आपरी भूपडी मे चठयो है । धारै सू आवाज आव—एक पावणी धारै दरवाज पर ऊभी है । नाव डियो भूपडी रै फाड मायन सू दख तो उणने कौरव कुळ री राजकुमार खडघो निजर आव । वो सोच के म्हारा धन भाग जो आज राजकुमार म्हार दुघारै आया है । 'क्यू गरीबपरवर, आज इण गरीब री भपडी ताई किया पधारणी हूओ ?' सुदास पूछयो । राजकुमार बोल्थो— सुदास, आज म्ह धार दुघार पर एक आसा लयर आयो हू, एक मिगारी वण'र भीख मागण न आयो हू ।' सुदास कह्यो—'भरतकुळ रा राजकुमार, सोन री सिधासण रा मालिक, आपरा वळ अर वभव र आग मोटा-मोटा राजवी पाणी भर । इसा सामरथ होवता थका ई आप म्हार खन धाई मागण न पधारघा हो, महाराज ।'

'मुदास काई बनाऊ ! जू मू सत्यवतो नै पिताजी (राजा सातनु) देखी है व ठणसू ध्याव करणी चाव, पण पिताजी न सक है के उगरी सतान राजा नी बण सकला । म्यान धी सक धारी इज पना कियोहो ह । मू भ्राज सू प्रग कर व मू राजगानी रो मासिक नी बणूला । मुनाम, मू म्हारी बाज पर विसवाम रास ।'

भलां मोचो बठ ती भ्राज री मानव धर बटे धी राज-कुमार ! इण जमाना रा सपूत ती पिता र मुख सातर धारो स्वान्य छाडणी तो भाधी रह्यो, बांम पडया पिता नै इज छोड द । व ती गामेयकुमार जिमा नरवार इज छै व जिनी पिता र सातर राजपाट इज छोड द ।

'राजकुमार सुणो, दुनिया में इसी कृप है जिसे पीना री सतान न सुणी नी दगणी चाव । धार भा ज्ञानी व मू ती राजपाट छोडण न तयार ह, पण धारणा धारा न चीज न कदेई बरदास्त नी करेला । व म्हारा दग रा बमवार सतान र मना मू राज खोम लवेला । कइ राजकुमार धारो कवणी गलत है ?' मुदाग एक सास में इज ज्ञानी दात कदरी ।

गामेयकुमार बोली—'मुदास, धारो दात जोड, इज सही है । ले मू जावण भर धारो छू रा, पिता र माता सत्यवतो री इज व काई सकने छैला ।'

यो हो भोस्म री प्रग, मू रा धरन ।

गागेवकृमार री नाम बदळ'र भीम पितामह री नाम सू उणन जग-जाहिर कर दियो ।

जठ सत व्है, उठ इज निडरपणी व्है । सत अर निडर-पणी भाई बन है । अ दोनू साग सागै इज रव ।

महाभारत री जुद्ध बंद व्हैग्यो हो । फगत भीम र साग दुरजोधन री गदा जुद्ध बाकी हो । दुरजोधन तळाव रा कमळी में छिप्योडो हो । तळाव री पाळ पर भीम अर नकुल फिर रह्या हा । रीस सू बारा मूडा राता व्हैग्या हा । उणां बह्यो—'अरे, श्री कुण कुळ वळ क, डरपोव, कायर, पापी, तळाव मं छिप्योडो बठघो है ? यू छिप ने बैठता थन लाज नी आव ?' दुरजोधन चुपचाप सुण रह्यो हो । आज उणरो चेहरो फुह्ळीगियोडो हो । सूरज भगवान अस्त होवण वाळा हा के दुरजोधन तळाव र बार निवळघो । उणर मन मे एक आवाज हुई—जे थू जीव बचावणी चाव तो युधिष्ठिर खा जा, उठे थन साची सला मिळ ला । दुरजोधन रा पग आप सू आप धमराज र तयू बानी आग बड़िया । धमराज उणरो बडो सत्कार कियो, अर पूछघो—बोल भाई दुरजोधन ! बिकर आया ? आज तो घणा दिनां सू मिळघा । जे थू आज ई सुलह करणी चावतो व्है तो भगवान किरण र बहघोडा वचना माफक म्हू आज ई तयार हू । दुरजोधन बोल्यो—'म्हू आज आपरै साग सुलह करणन नी आयो हू, पण एक सत्ताह लवण ने आयो हू । बात आ है के काले भीम रे साग म्हारो जुद्ध
 ॥ म्हन आप कोई इसी उपाय बतावो जिणसू भीम

हार जाव अर म्हारी बाळ ई वाको नो रहे ।'

माश्या ! एक विचार करण जोग वान है । आज से कोई राजनीतिग्य रहे तो दुरजोधन न इमा जोरार सलाह देवतो के उणन इ घणा दिना ताई याद रवतो । पण आज तो युधिष्ठिर हो । मतवाणी युधिष्ठिर ! जिकी राजनीति में ना पण सत अर 'याय माय चालती । उण विचार कियो— 'मत्ये नास्ति भय क्वचित्' सत न कठ ई डर नो है । दुरजोधन म्हार मन विसवास लयन आयी है तो इणन माची कण्ह देवणी चाहिज ।

युधिष्ठिर कह्यी—'भाई दुरजोधन, उपाय तो दूर घर मे इज मौजूद है । यू मा गाधारी एन जा वा पुरुष पत्रशत्रु है । जे वा घने निजर भर न देखल तो धारो कण्हो इ मरण वजर से बण जावला । पछ इतर से बजर पर भीम से गदा धारो बाळ ई वाको नो कर सकना । पण मां ध्यान राखज के जिवण अग पर उणरी निजर पन्ना की इव बजर से बणला ।'

एकण कानी भाई से जिदगी से कण्ह हो अर मन्त-सद से राज हो । उण सगळो न युधिष्ठिर शव पर लगाव दियो अर दुरजोधन न साची कण्ह पुरदा । की साचण लाग्यो—बाह, अर तो भारत से 'अर्ध' मिर पर इज समभौ पाहवा से सत्यानाम करण । पण जिन न रामसे राखे उणन कोई तो चारक । मुजुदसू 'न भारत में मिळग्या । उणा पछयो—दुखार, शत्रु तो राजी

रह्यो है, इसी काई बात है ?' दुरजोधन मूछा ताण'र बोल्थी 'त्रिस्ण, ये म्हन घणा दिनां ताई जाल में फसायी, पण अर म्हू इसी जगै जाय रह्यो हू, जठ थारो कोई दाव ती लागला । घमराज पोत म्हन सलाह बताई है ।' भगवान त्रिस्ण ती घणा चतर हा । उणा सोच्यो—एक ती ना'र अर फर उणर पान्या आय जावै ती परडै इज धर नाख । त्रिस्ण बोल्या—अ मूरख, माता र सामन एकदम नागो होय नै मत जाइज । कठैई उणे आख्या वद धरली ती सगळी रापटरोळ व्है जावला । कंवत है के 'विनास काळे विपरीत बुद्धि ।' दुरजोधन र त्रिस्ण री बात अगोअग लागी । उण क्ह्यो—'आप ठीक फरमाय रह्या हो । त्रिस्ण बोल्या—'ल, आ कमळ र फूला री माळा लेजा ।' इणन पर'र माता र सामन जाइज ।' दुरजोधन माता गाधारी र खनै गयो अर आपरा सरीर पर निजर फेरण री अरदास धरी । माता गाधारी बोली—बेटा म्हारी गिजर में काई करामात है, म्हन इणरो पती नी थू कव ती गिजर फेर दू ।' यू कय न गाधारी दुरजोधन र सगळा सरीर पर निजर नाखी । पगत गुप्त अग जिकी माळा सू ढवयोडी हो उणन छाड'र सगळी सरीर वजर री वणग्यो । गाधारी बोली—

वेळ घह नटवर तुम्ह फूलों की माला दे गया ।

जिवगी के फूल तेरे, धाज चुन कर ल गया ॥

मेरा क्या है दोष इसमें, मैं तो सच्ची रह गई ।

पर जिस जगह पदां किया, वह जगह कच्ची रह गई ॥

ओ है सत रे जीवन में सुळगती आचरण । जीवन मे जिण वसत सत आव तो मानध वारला स्वारथ, लोभ अर भय न

छोटे से घर सत रँ सार जिदगी, धन, मान भर मुनियां न इ लान मार देव है। सतवादी मकटां जग्या नू मिट्या पाज्या जग घर कीरत न एक पलक में छोड देव। वेदव्याप्तजो सन रो म'या धतावना कह्यो है—

अन्वमेव सहस्राणि, सार्धं च तुसया वन्द्यः ।
अन्वमेव सहस्रादि, सत्यमेव विचिन्तये ॥

नाकड़ा र एक छेडा म एक हजार अन्वमेधा री छट म...
दूजोडा छेडा में एकला सन न राखी साम पन हउ दू...
हैला ।

इण धाम्त इज रिसि, मुनि, ताप कर हउ न...
वन वन भटवता धका नागा भूसा रह्या, न...
लीफा महन बीबी अर छेवट जो सत रा...
पर कायम रह्या ।

एक साधारण मिनग न जिकी म...
न उगारा दरसन ती व्ही, भा बात नी...
काळ घर पात्र र भेद मू सन में के...
असत नो कह्यो जा सक । पूरन...
दोरी है । सत घरमी मिनग अने...
नू मिळ उठा मू इज मत नै...
अमुक पोथ्यां या अमुक सप्र...
कर । यी ती चारा चारा द...
खोज्योडा भान भात रा सत...
मत रा जोर मू पात्रा री...

वी राग व्हेस सू धाघी व्हेतो जाव, मानव्या न सत र नडो लावण री कोसिस करतो जाव । सत री उपासना री सही तरीकी श्री इज हे के इणसू मिनरत अमरता वानी धाग वध ।

जे धापा ई सत री पगडाडी पर घाला ती धापां री जीवन इमरत सू पूरण व्हे जाव सांतिदायक भर धाणददायक वणव जाव । भारतीय सस्त्रिति इणोज सत री उपासना सू दुनिया न साती री सदेम देवती रही है ।

उम्मीद है के धाप पण सत रूपी इमरत री स्वाद चाख'र धापरा जीवन न सत रा धाणद सू पूरण वणावीला ।

